आसान हज
मौलाना मो० मंजूर नोमानी (रह)

आसान हज

लेखक

मौलाना मो० मंजूर नोमानी
(रह०)

दो शब्द

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيم

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम

"आसान हज" वालिदे मोहतरम हज़रत मौलाना मु० मंजूर नोमानी की हज से मुताल्लिक़ बहुत मक़बूल व मशहूर किताब है। इस किताब के उर्दू ज़बान में अब तक 33 एडीशन शाय हो चुके हैं।

1983 में यह हिन्दी ज़बान में भी शाय हुई थी। लेकिन तर्जूमे की ज़बान कठिन होने

के कारण इसको वह मक़बूलियत हासिल न हो सकी जो उर्दू को हासिल है। इधर कई साल से लोगों का बेहद इसरार है क़ि इसका आसान हिन्दी एडीशन शाय किया जाए। लेकिन इदारा कुछ ऐसे कामों में मसरूफ़ था कि यह फ़रमाइश पूरी न की जा सकी।

अब अल्लाह का शुक्र है कि इदारे ने अपनी तमाम किताबों को हिन्दी में शाय करने का काम शुरु कर दिया है। "इन्सानियत ज़िन्दा है" और "इस्लाम क्या है" के बाद अब "आसान हज" का हिन्दी एडीशन पेश है।

दुआ है कि अल्लाह तआला उर्दू की तरह इसके हिन्दी एडीशन को भी मक़बूलियत अता फ़रमाए, और इस किताब से अपने ज़्यादा से

ज़्यादा बन्दों को फ़ायदा पहुंचाए।

आख़िर में उन तमाम भाईयों से जो हज के दिनों में इस किताब से फ़ायदा उठाएं दरख़ास्त है कि वह इस किताब के मोहतरम लेखक और इस आजिज़ नाशिर (प्रकाशक) के लिए भी दुनिया और आख़िरत में भलाई की दुआ फ़रमाएं। इन्शाअल्लाह अल्लाह तआला आपको इसका बेहतर से बेहतर बदला अता फ़रमाएगा।

मुहम्मद हस्सान नोमानी

20-3-1991 ई०

ज़्यादा बन्दों को फ़ायदा पहुंचाए।

आख़िर में उन तमाम भाईयों से जो हज के दिनों में इस किताब से फ़ायदा उठाएं दरख़ास्त है कि वह इस किताब के मोहतरम लेखक और इस आजिज़ नाशिर (प्रकाशक) के लिए भी दुनिया और आख़िरत में भलाई की दुआ फ़रमाएं। इन्शाअल्लाह अल्लाह तआला आपको इसका बेहतर से बेहतर बदला अता फ़रमाएगा।

मुहम्मद हस्सान नोमानी

20-3-1991 ई०

तआ़रुफ

بِاسْمِهٖ سُبْحَانَهٗ حَمْدًا وَّسَلَامًا

हज व ज़ियारत के मुतअल्लिक़ उर्दू में अब बे गिन्ती किताबें शाये हो चुकी हैं, लेकिन इस आजिज़ की मुरत्तब की हुई किताब

"आप हज कैसे करें"

जो अब से लगभग 42 साल पहले लिखी गई थी अपनी इस ख़ुसूसियत में आज भी मुमताज़ और सब से अलग है कि इसके पढ़ने से दिल में वह सोज़ व गुदाज़ और आशिक़ाना जज़्बा भी पैदा होता है जो हज की रुह और जान है, और हज व ज़ियारत के मुतअल्लिक़

ज़रूरी मसायल और आदाब भी मालूम हो जाते हैं, और इसकी रहनुमाई में हज करने वाले को बिलकुल ऐसा मालूम होता है कि कोई राह व मंज़िल का जानने वाला और बाख़ुदा रहनुमा हाथ पकड़े मसनून तरीक़े पर हज करा रहा हो और हर मौक़े पर बताता चल रहा हो कि यहां यह करो अैर यहां यह पढ़ो, यह कहो।

इस किताब "**आप हज कैसे करें**" की इशाअत के बाद ख़ुद भी महसूस किया और दूसरों ने भी बताया कि बहुत से भाइयों के लिये एक ऐसी किताब की भी ज़रूरत है जो इसी ढंग पर लिखी जाय लेकिन वह इससे छोटी हो और उसकी ज़बान और ज़्यादा आसान

हो जिसको बहुत कम पढ़े लिखे भी पढ़ सकें।

यह किताब "आसान हज" अबसे लग-भग चालीस साल पहले इसी मक़सद से लिखी गई थी, अल-हम्दु लिल्लाह उस वक़्त से अब तक हर साल हज़ारों हाजी इसकी रहनुमाई में हज करते हैं, उनका आम एहसास यही मालुम हुआ कि इसको उन्होंने हज व ज़ियारत के लिए बेहतरीन रहनुमा और मुअल्लिम पाया। इस नाचीज़ की इजाज़त से अंग्रेज़ी, गुजराती और हिन्दी में इसका तर्जुमा भी शाय हो चुका है।

इस साल सन 1410 हिजरी मुताबिक़ सन 1990 ईसवीं मे नाचीज़ ने इसपर एक बार

फिर नज़रे सानी की और कुछ जगहों पर कुछ तरमीमात व इस्लाहात भी की हैं, अल्लाह तआला इसको और ज़्यादा क़ुबूलियत अता फ़रमाए और अपने बन्दों को इसके ज़रिये ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुंचाए और मुझ गुनहगार बन्दे के लिए मग़फ़िरत का वसीला बनाये—आमीन

मो० मंज़ूर नोमानी

अफ़ल्लाहु अन्हु

रमज़ान, सन 1410 हिजरी

लखनऊ

हज को जाने वाले
हर भाई की सेवा में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

(बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम)

यक़ीनन अल्लाह तआला ने आप पर यह बड़ा इनआम फ़रमाया कि हज व ज़ियारत का इरादा और शौक़ आपके दिल मे पैदा किया,उसी करीम कारसाज़ से दुआ है कि वह आपको ऐसा हज नसीब फ़रमाये जिसका बदला जन्नत और उसकी खुशी हो और जिसके बाद आप बिलकुल पाक–साफ़ होके लौटें और अल्लाह व रसूल के साथ आपको सच्चा ईमानी सम्बन्ध

व तअ़ल्लुक़ नसीब हो।

नियत

आशा है कि आपकी नियत अल्लाह के फ़ज़्ल से बिलकुल सही और ख़ालिस होगी परन्तु मेरे भाई! शैतान हम इन्सानों का बड़ा मक्कार और धोकेबाज़ दुश्मन है, वह हमारे नेक अमल और हर इबादत को ख़राब व बरबाद करने की ऐसी-ऐसी छुपी हुई और बारीक कोशिशें करता रहता है जिनका हमें पता भी नहीं चलता, विशेष रूप से हज चूंकि बहुत ही आला दर्जे (उच्च कोटि) का नेक अमल है और उससे बन्दे के दीन (धर्म) में और उसके दर्जों में बहुत तरक़्क़ियाँ होती हैं,

और यदि वह ठीक तरह से अदा हो जाय तो उससे सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं, इसलिए शैतान उसे ख़राब और बरबाद करने की बड़ी गहरी कोशिशें करता है। इस सम्बन्ध में उसकी सबसे पहली कोशिश यह होती है कि किसी प्रकार बन्दे की नियत को ख़राब करदे, तो मेरे भाई ! शैतान की इस शरारत से होशियार रहना और अपनी नियत और अपने दिल की बराबर देख-भाल करते रहना। शैतान आपके दिल में इस प्रकार के विचार डालने की कोशिश करेगा कि हज करने से लोग हमें बहुत अच्छा और नेक समझने लगेंगे, हमारा आदर अधिक करने लगेंगे, हमारी बात का विश्वास बढ़ जायगा, कभी-कभी वह यह

बहकावा देगा कि चलो मक्का शरीफ देखेंगे, मदीना शरीफ आदि देखेंगे। आप इनमें से किसी चीज़ को भी अपने इस सफ़र का मक़सद और उद्देश्य न समझें और इन सब बातों को अपने दिल से निकाल कर बस अल्लाह के आदेश का पालन, उसके फर्ज़ की आदायगी, और उसकी ख़ुशी और आख़िरत के सवाब को अपना असल मक़सद व मतलब बनायें, और सफ़र शुरू करने से पहले और रवानगी के बाद रास्ते में अपनी नियत और अपने दिल की शैतान के भुलावे व बहकावे से बराबर हिफ़ाज़त करते रहें अगर ख़ुदा न करे शैतान नियत ख़राब करने में सफल हो गया तो सारी मेहनत और सारा अमल बरबाद हो

जायगा, हर अमल के कुबूल होने की पहली शर्त नियत का सही होना है।

कहने का मतलब यह है कि इसकी पूरी कोशिश करें कि इस यात्रा से आपकी ग़रज़ यह हो कि अल्लाह के आदेश को पूरा करके आप उसको राज़ी करें और उसके अज़ाब से छुटकारा और वह सवाब प्राप्त कर सकें जिसका वादा हज करने वालों के लिये क़ुरान शरीफ़ और हदीस शरीफ़ में किया गया है। नियत के सही होने के लिये और शैतानी बहकावे से दिल की सुरक्षा के लिये आप अल्लाह तआला से दुआ भी करते रहें, यदि अल्लाह का फ़ज़्ल शामिले हाल हो तो फिर शैतान कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

जाने से पूर्व हज की असल तय्यारी

आपको और हज को जाने वाले हर मुसलमान भाई को मेरी दूसरी ख़ास सलाह यह है कि हज के लिए जाने से पूर्व अगर ज़्यादा नहीं तो कम से कम सप्ताह दो सप्ताह किसी ऐसे दीनी माहौल में अवश्य गुज़ारें, जहाँ रहने से अल्लाह से ताल्लुक़ और उसकी मोहब्बत बढ़े, उसकी याद तथा उसकी इबादत का शौक़ तरक्क़ी करे, और दुनिया की चिन्ताओं में कमी और आख़िरत की चिन्ता अधिक हो। यह चीज़ें अल्लाह के सच्चे और अच्छे बन्दों के साथ में रहने से पैदा होजाती हैं—और उसकी एक आसान और बहुत मुफ़ीद सूरत मेरे इल्म

व तजुर्बे के अनुसार यह है कि एक दो सप्ताह किसी ऐसी तबलीग़ी जमाअत के साथ भी गुज़ारें जो ख़ास तौर से हाजियों में काम करने के लिये निकली हुई हो और जिसके तालीमी प्रोग्राम में हज के आदाब और उसका तरीक़ा सीखने–सिखाने की भी ख़ास व्यवस्था हो। जहाँ तक मुझे ज्ञात है हिन्द व पाक में बम्बई, दिल्ली और कराची जैसे शहरों में हाजियों की तालीम व तरबियत की ख़ास व्यवस्था तबलीग़ी जमाअत की ओर से की जाती है, और भी मुल्कों मं शायद अब यह कोशिश शुरू हो चुकि है। मेरा निवेदन केवल यह है कि अल्लाह के घर पर हाज़री से पहले अपने दिल को अल्लाह तआला की मोहब्बत

और याद से आबाद करने के लिये कुछ न कुछ तदबीर आप अवश्य करें।

अगर आपने मेरे इस मशवरे के अनुसार कुछ समय जाने से पूर्व अल्लाह के किसी ख़ास बन्दे के साथ में या किसी अच्छी तबलीग़ी जमाअत के साथ गुज़ार लिया तो इनशाअल्लाह आप हज की ख़ास बरकतें और लज़्ज़तें प्राप्त करने के क़ाबिल बन जायेंगे, और अल्लाह ने चाहा तो आपको वह हज नसीब होगा जिसका बदला अल्लाह की ख़ास मोहब्बत और जन्नत है।

अफ़सोस! आज कल लोग हज़ारों रुपये भी ख़र्च करते हैं ओर महीनों पहले से दुनिया भर की व्यवस्था भी करते हैं और अच्छा

ख़ासा समय भी इस सफ़र में लग जाता है, परन्तु अपने को हज के क़ाबिल (योग्य) बनाने के लिये कुछ भी नहीं करते, हालांकि हज तो ऐसी ऊंची चीज़ है कि यदि वर्षों पूर्व से भी उसके क़ाबिल बनने की तय्यारी की जाये तो कम है।

सफ़र का ज़रूरी सामान

सफ़र के सामान के बारे में मेरी सलाह आपको और हज को जाने वाले हर भाई को यह है कि जहाँ तक हो सके कम से कम सामान साथ लीजिये, जो लोग समुन्द्री जहाज़ से सफ़र करें, उनके लिये भी मेरे नज़दीक बस यह चीज़ें काफी हैं।

पहनने वाले कपड़ों के 4 या 6 जोड़े, एक गर्म सुवेटर या गर्म कोट या सदरी (मक्का मुअज़्ज़मा में अगरचे सर्दी कम पड़ती है लेकिन मदीना तय्यिबा में कभी–कभी सख़्त सर्दी होती है) एक या दो तहबन्द, दो तौलिये, ओढ़ने की दो चादरें, इनके अलावा एहराम की दो चादरें[1], एक ऐसी जानमाज़ जिस पर नीचे की तरफ़ चमड़ा या रेगज़ीन या प्लास्टिक लगा हो। मौसम के मुताबिक़ एक बिस्तर जिसमें एक कम्बल भी होना चाहिये। लगभग एक मीटर चौड़ी और ढाई मीटर लम्बी प्लास्टिक की एक चटाई जिसको आप हर जगह बिछा सकें, या होलडाल जिससे यह काम लिया जा

1.बेहतर यह है कि एहराम के 2 सेट लिये जायें।

सके। रस्सी की एक मज़बूत सी डोरी, थोड़ी सी सुतली, सुई, धागा, चाकू, उस्तरा या ब्लेड, कैंची, आइना, दो पलेटें, दो प्याले, दो चमचे, एक गिलास, एक छोटी सी पतीली, छोटा सा नाश्तेदान, एक ऐसा बक्स या बड़े क़िस्म का हैन्ड बैग जिसमें यह सब चीज़ें आसकें, एक छतरी, एक लोटा, एक टार्च, और एक छोटा सा बैग जो गले में लटकाया जा सके जिसमें पासपोर्ट और उस तरह के ज़रूरी क़ग़ज़ात रखे जा सकें, क्योंकि अब चेकिंग बहुत ज़्यादा होने लगी है इसलिये पासपोर्ट का हर वक़्त साथ रहना ज़रूरी है। अच्छा यह है कि बनयाइन में इतनी बड़ी जेब लगवा लें जिसमें पासापेर्ट आ जाये।

अगर यह चीज़ें आपके साथ होंगी तो इनशाअललाह आपके सारे काम निकलते रहेंगे, और आपको वह परेशानियाँ भी न होंगी जो ग़ैर ज़रूरी सामान साथ रखने की वजह से बहुत से लोगों को होती हैं। हिजाज़े मुक़द्दस में ठहरने के ज़माने में खाने पीने की चीज़ें साथ रखने की बिलकुल ज़रूरत नहीं, ज़रूरत की हर चीज़ अब हर जगह मिल जाती हैं, क़ीमतों में भी बहुत ज़्यादा अंतर अब नहीं होता, बल्कि अब तो सऊदी अधिकारी खाने पीने की चीज़ें ले जाने की बिल्कुल इजाज़त नहीं देते। इस मौक़े पर यह भी साफ़ बता देना बेहतर है कि जो चीज़ें ऊपर लिखी गई हैं वह भी सब की सब वहाँ मिलती हैं, लेकिन

सिर्फ़ इस ख़्याल से यहाँ वह लिख दी गई हैं कि यहाँ से ले जाने की सूरत में वहाँ का एक एक लम्हा (क्षण) आमाल में गुज़रे न कि बाज़ारों में। और यह भी ख़्याल रहे कि इन चीज़ों की ज़रूरत भी हक़ीक़त में उन लोगों को है जो एक ख़ास मेयार (स्तर) की आराम व राहत वाली ज़िन्दगी के आदी हो गये हैं, और उन में तकलीफ़ें उठाने की हिम्मत नहीं है। लेकिन अललाह के जो बन्दे इस सफ़र को इश्क़ व मुजाहिदे का सफ़र समझ कर कुछ तकलीफ़ें उठाने की हिम्मत करलें, उनके लिये इनमें भी बहुत सी चीज़ें ग़ैर ज़रूरी हैं।

मेरे छोटे भाई हाजी महमूद हुसैन मरहूम

ने हज का सफ़र इस शान से किया था कि जो कुर्ता पाजामा पहने हुये थे चलते वक़्त उसी के ऊपर से एक पाजामा, कुर्ता और पहन लिया था, (जो आगे चलकर शायद किसी साथी के सामान में रख दिया होगा) कुर्ते के ऊपर एक सदरी थी, इसके अलावा कपड़ों में बस एक दोतही और एक तहबन्द था, और यह दोनों चीज़ें काँधे पर डाल ली थीं, बर्तनों में बस एक टीन का लोटा था जो हाथ में रक्खा था।

सिर्फ़ यही था उनके हज के सफ़र का कुल सामान, समझने वाले समझ सकते हैं कि पूरे सफ़र में वह कितने हलके-फुलके और

कितने फ़ारिग़ और आज़ाद रहे होगें।[1]

लेकिन ज़ाहिर है कि हर व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता, और हर एक को इसका मश्वरा भी नहीं दिया जा सकता, इसलिये असल मश्वरा हर हज का सफ़र करने वाले को इतना ही है कि जहाँ तक हो सके कम से कम सामान साथ लिया जाये।

सफ़र करने से पहले गुनाहों से पाकी

बन्दे को यूं तो हमेशा ही अपने गुनाहों स तोबा व इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिये और

1. लेकिन यह ख़याल रहे कि मौसम गरमी का था।

इसी तरह अल्लाह के बन्दों के हुक़ूक़ के बोझ से भी अपने को हलका करने की कोशिश बराबर करते रहना चाहिये, लेकिन हज के लिये रवाना होने से पहले बहुत ही ख़ास तरीक़े से अपने गुनाहों से खुदा के सामने सच्ची तौबा और उससे माफ़ी और बख़शिश की दरख़्वास्त करना चाहिये, और इसी तरह अगर कुछ बन्दों के हुक़ूक़ अपने ज़िम्मे हों, चाहे अपने घर वालों के, चाहे रिश्तेदारों के , चाहे पड़ोसियों के, चाहे दूसरे लोगों के, तो रवाना होने से पहले ही उनका मामला भी पूरी फ़िक्र और कोशिश से साफ़ कर लेना चाहिये,मतलब यह है कि या तो वह हुक़ूक़ अदा कर दिये जायें या हक़दारों से माफ़

कराये जायें, बहरहाल इसकी पूरी फ़िक्र और कोशिश की जाये कि आप हज के लिये ऐसे हाल में रवाना हों कि सच्ची तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रिये गुनाहों की गन्दगी और नापाकी से अपने को पाक–साफ़ कर चुके हों और अल्लाह के बन्दों के हुक़ूक़ का बोझ भी आपकी गरदन पर न हों।

रवानगी

जब घर से रवानगी का वक़्त आय तो जहां तक हो सके पूरे इतमीनान के साथ दो रकआ़त नफ़ल नमाज़ आप अपने घर में पढ़ें और सलाम फेरने के बाद अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें कि उसने ऐसे मुबारक काम

की आपको तौफ़ीक़ दी और उसके बाद दुआ करें, सफ़र में आसानी की और हर तरह की भलाई व सुकून की और गुनाहों से बचे रहने की और कुबूल होने वाला हज नसीब होने की दुआ ख़ास तौर से और खूब दिल से मांगे।

इसके बाद घर वालों से रूख़सत होकर अल्लाह का नाम लेकर घर से चल दें, अब आपका सफ़र शुरु हो गया, सफ़र के इस ज़माने में जिन बातों का आपको ख़ास तौर से ख़्याल रखना चाहिये यह हैं :

नमाज़ और जमाअत का पूरा ख़्याल रहे, जहाँ तक हो सके हर नमाज़ वक़्त पर और जमाअत से पढ़ी जाय, साथियों के साथ आपका बरताव (व्यवहार) मोहब्बत और ख़िदमत (सेवा)

का हो, किसी से लड़ाई–झगड़ा न हो, किसी को आपसे तकलीफ़ न पहुंचे, गुनाह के कामों और गुनाह की बातों के अलावा बेकार और फ़ुज़ूल बातों से भी अपनी हिफ़ाज़त की जाय, आपके साथ जाने वालों में जो आपसे ज़्यादा दीन के जानने वाले हों उनसे या अच्छी मौतबर किताबों की मदद से दीन सीखने का और जो आपसे कम जानने वाले हों, उनको सिखाने और बताने का सिलसिला बराबर जारी रखें, अल्लाह की याद और उसके जिक्र से भी ग़ाफ़िल न हों।

मेरा ख़ुद भी तजुर्बा है और अनगिनत लोगों ने अपनी आप बीती सुनाई कि तबलीग़ी जमाअतों के साथ सफ़र के तजुर्बे ने हज के

सफ़र को बहुत आसान भी बना दिया और बेकार व बेमाना बातों से बचना और हर वक़्त अकेले या सब के साथ किसी न किसी अमल में मशगूल रहना भी इसी मश्क़ (अभ्यास) की बदौलत आसान हो गया, बहरहाल हज के सफ़र के दौरान ज़िक्र व दुआ तबलीग़ व दावत और तालीम व ख़िदमत जैसे आमाल में मशग़ूली का ख़ास ख़्याल करना चाहिये।

मीक़ात पर एहराम

सफ़र अगर पानी के जहाज़ से हो रहा है तो कई दिन जहाज़ चलने के बाद जब जद्दा का रास्ता एक या डेढ़ दिन का रह जाता है तो वह जगह आती है जहाँ से हिन्दुस्तानी

हाजी आम तौर से एहराम बांधते हैं, लेकिन यहाँ एहराम सिर्फ़ वही हाजी बांधते हैं, जो जद्दा उतर कर पहले मक्का मुअज़्ज़मा जाने का इरादा रखते हैं चूंकि अब पानी के जहाज़ नहीं चलते और हज का सफ़र अब हवाई जहाज़ ही से होता है इस लिय हवाई जहाज़ में बैठने से पहले ही एहराम बांध लें क्यों कि जहाज़ में एहराम बांधना बहुत कठिन होता है और जगह की कमी के कारण दूसरों को परेशानी होती है। बहरहाल जद्दा एयरपोर्ट पहुंचने से आधा घंटा पहले ही एहराम बांध लेना ज़रूरी है, और जिन लोगों का इरादा मक्का मुअज़्ज़मा की हाज़िरी से पहले मदीना तय्यबा हाज़िर होने का हो उनके एहराम

बांधने का वक़्त और मौक़ा जब आयेगा जब वह मदीना तय्यबा से मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ़ रवाना होंगे। आप शायद पहले मक्का मुअज़्ज़मा ही जायेंगे (समुन्द्री जहाज़ से सफ़र की सूरत में आपको जहाज़ ही में उसी मुक़ाम पर एहराम बांधना होगा, जहाज़ के उस ख़ास मक़ाम पर पहुंचने से कई घंटे पहले से जहाज़ में उसकी चर्चा होने लगेगी, और जहाज़ के कप्तान की तरफ़ से एलान भी किया जायेगा, उस वक़्त आप भी एहराम के लिये तैयार हो जायें बहुत से उलमा (विद्वानों) की यह तहक़ीक़ है कि दिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगला देश से समुन्दरी जहाज़ों से सफ़र

करने वाले हाजी जद्दा पहुंचकर भी एहराम बांध सकते हैं, मुझे भी इससे इतिफ़ाक़ है) आप के लिय बेहतर है कि आप अपनी क़्यामगाह से रवाना होने से पहले अगर हजामत बनवाने का मौक़ा मिल जाये तो हजामत बनवा लें, नाखून तरशवा लें, बग़ल वग़ैरह की सफ़ाई कर लें और खूब अच्छी तरह से गुस्ल करलें (याद रहे कि एहराम से पहले हजामत और बग़ल वग़ैरह की सफ़ाई और गुस्ल करना वाजिब नहीं है बल्कि मुस्तहब है, इसलिय अगर इन चीज़ों का मौक़ा न मिले तो सिर्फ़ वजू कर लिया जायें, एहराम के लिये सिर्फ़ वज़ू करना ज़रूरी है।)

हज और उमरा

एहराम बांधने का तरीक़ा मालूम करने से पहले आप यह बात समझ लीजिये कि ख़ास मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचने के बाद जो इबादत अदा की जाती है वह एक तो हज है और इसके अलावा एक उमरा है उसको यूँ समझिये कि यह गोया छोटे क़िस्म का एक हज है, हज तो नमाज़, ज़कात और रमज़ान के रोज़ों की तरह इसलाम के फ़रायज़ और बुनयादी अरक़ान में से है, मगर उमरा फ़र्ज़ नहीं है बल्कि सिर्फ़ सुन्नत है। इसी के साथ अब आप यह भी समझ लीजिये क्रि जो लोग हज को जाते हैं अगर उनका इरादा यह हो कि वह

मक्का मुअज़्ज़मा पहूंच कर हज से पहले कोई उमरा न करेंगे, बल्कि हज ही करेंगे तो हज की इस सूरत को "इफ़राद" कहते हैं, और अगर उनका इरादा यह हो कि जाकर उमरा करेंगे, और फिर हज अदा करेंगे तो उसकी दो सूरतें हैं।

एक यह कि हज और उमरा दोनों के लिये एक ही एहराम बांधा जाय और एक ही एहराम से दोनों को अदा करने की नियत की जाय तो इसको "क़िरान" कहते हैं और अगर ऐसा किया जाय कि पहला एहराम सिर्फ़ उमरा के लिये बांधा जाय और वहाँ पहुंच कर उमरा अदा करके वह एहराम ख़त्म

कर दिया जाय और फिर हज के लिये मक्का मुअज़्ज़मा ही में दोबारा एहराम बांधा जाय और उससे हज अदा किया जाय तो हज की इस सूरत को "तमत्तो" कहते हैं। अहनाफ़ (इमाम अबू हनीफ़ा के मानने वालों) के नज़दीक अगरचे अफ़ज़ल (सब से बेहतर) क़िरान की सूरत है लेकिन अकसर लोगों के लिये वह मुश्किल है क्योंकि उसमें मीक़ात पर जो एहराम बांध जाता है वह हज से फ़ारिग़ होने तक रहता है, और इतने दिनों तक एहराम की पाबंदियों का निभाना आम लोगों के लिये ही नहीं बल्कि बहुत से ख़ास लोगों के लिये भी मुश्किल होता है कि न जानने की वजह से या

भूल—चूक से ऐसी बातें और ऐसी चीज़ें हो जाती हैं जो एहराम की हालत में नहीं होनी चाहिये और उनकी वजह से ख़राबी पैदा हो जाती है (और इफ़राद में भी यही मुश्किल है) इस लिये अकसर लोगों के लिए यही मुनासिब है कि वह तमत्तो वाली शक्ल इख़्तियार करें, आपको भी मेरा मशवरा यही है। जब यह बात आपने समझ ली और जान ली तो अब सुनियेः—

आप जब एहराम बांधने का इरादा करें तो जैसा कि ऊपर अभी मैंने बतलाया कि आप नहा धोकर और मैल कुचैल और हर क़िस्म की गन्दगी से जिस्म को पाक साफ़ करके एहराम की एक चादर बांध लें और एक ओढ़ लें।

एहराम और उसका तरीका

एहराम दरअस्ल उन चादरों के पहन लेने का नाम नहीं है, और न सिर्फ़ उस लिबास के पहन लेने से एहराम शुरू होता है बल्कि आपका एहराम दरअस्ल उस वक़्त शुरू होगा जब आप एहराम की दो रक्अतें पढ़ के हज या उमरा की नियत के साथ तलबियह पढ़ेंगे, और उसी वक़्त से आप पर एहराम की पाबन्दियाँ लगेंगी।

अभी ऊपर लिख चुका हूं कि आपके लिये तमत्तो बेहतर है तो आप ऐसा करें कि जब एहराम का इरादा करें तो जैसाकि मैंने अभी ऊपर बतलाया कि आप नहा धोकर एक चादर

बांध लें और एक ओढ़ लें और ख़ूब इतमिनान के साथ दो रक्अत नमाज़ पढ़ें,[1] उस नमाज़ में एहराम की ओढ़ने वाली चादर सर से ओढ़े रक्खें और जैसे ही सलाम फेरें तो चादर को सर पर से उतार लें (यानी सर खोल लें) और सिर्फ़ उमरा की नियत करके किसी क़दर आवज़ के साथ तीन बार तलबियह पढ़ें। तलबियह यह है।

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ
اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुमा–म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक

---

1. आपके लिये बेहतर है कि यह नमाज़ आप हवाई अड्डे पर जहाज़ की रवानगी से कुछ देर पहले पढ़ें।

ल—क लब्बैक, इन्नल हम—द वन निअ़ म—त

ल—क वल मुल्क, ला शरी—क लक।

इसका मतलब यह है कि "ऐ मेरे अल्लाह ! मैं हाज़िर हूं, मैं तेरे हुज़ूर में हाज़िर हूं तेरा कोई शरीक व साझी नहीं, मैं हाज़िर हूं, सब तारीफ़ें तेरे ही लिये ज़ेबा हैं, और सारी नेमतें तेरी ही दी हुई हैं और हुकूमत व बादशाहत सिर्फ़ तेरी ही है, तेरा कोई शरीक व साझी नहीं।"

इस तलबियह को पहले ही खूब याद कर लेना चाहिये, और इसके माने मतलब को भी अच्छी तरह ख़्याल में बिठा लेना चाहिये। और यह समझ कर पढ़ना चाहिये कि मैं अल्लाह से अर्ज़ कर रहा हूं, और वह सुन रहा है।

एहराम की दो रकअतों पढ़कर और सलाम फेर कर जैसाकि ऊपर बतलाया गया है आप उमरे की नियत के साथ तलबियह पढ़ें, और अल्लाह तअ़ला से अर्ज़ करें कि मैं सिर्फ़ तुझे राज़ी (खुश) करने के लिये उमरे का एहराम बांधता हूं, तू मुझे सही तरीक़े पर उमरा करने की तौफ़ीक़ दे,और शैतान से और नफ़्स की बुराई से मेरी हिफ़ाज़त कर, और मेरा उमरा कुबूल फ़रमा। इसके अलावा और भी जो चाहें अच्छी दुआयें उस वक़्त माँगें।

अब जब आपने उमरे की (या हज की) नियत करके तलबियह पढ़ लिया तो आप एहराम में दाख़िल हो गए, अब जब तक कि आप मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर उमरा अदा न

करलें उस वक़्त तक कोई सिला कपड़ा नहीं पहन सकते, सर और चेहरा किसी वक़्त भी नहीं ढक सकते, ऐसा जूता भी नहीं पहन सकते जिससे पैर के पीछे की उभरी हुई हड्डी ढक जाय, हजामात नहीं बनवा सकते बल्कि जिस्म के किसी हिस्से का एक बाल भी नहीं तोड़ सकते,[1] नाखून नहीं काट सकते, किसी क़िस्म की खुशबू नहीं लगा सकते, बीवी से हमबिस्तर नहीं हो सकते, और कोई ऐसी बात भी नहीं कर सकते जो इस ख़्वाहिश (इच्छा) को उभारने वाली हो और जिससे

---

1. औरतों के लिये भी एहराम के यही अहकाम हैं, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उनके लिये हुक्म है कि वह अपने आम कपड़े ही पहनें, और सर भी ढकें अलबत्ता चेहरा खुला रखें यानी (शेष अगले पन्ने पर)

नफ़्स को मज़ा मिलता हो, किसी जानवर का शिकार नहीं कर सकते, बल्कि अपने जिस्म या कपड़े पर चलती हुई जूं भी नहीं मार सकते।

यह सारी पाबंदियाँ आप पर उस वक़्त तक रहेंगी जब तक कि मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर आप उमरे से फ़ारिग़ होंगे (और जो लोग हज्जे क़िरान या इफ़राद का इरादा करेंगे, यानी इसी एहराम में उमरे के साथ हज की भी नियत करेंगे या सिर्फ़ हज्ज ही की

(पिछले पन्ने का शेष) एहराम की हालत में औरतों को भी चेहरे पर कोई कपड़ा नहीं डालना चाहिये, ग़ैर मरदों का अगर कहीं सामना हो तो पंखे जैसी किसी चीज़ की आड़ कर लेनी चाहिये, मगर इस तौर पर कि पंखा या कपड़ा चेहरे को न लगे।

नियत करेंगे, उनके लिये यह पाबंदियाँ हज से फ़ारिग़ होने तक रहेंगी)

हज और उमरा के सिलसिले का पहला अ़मल यही एहराम है, आप जिस वक़्त अपने घर से चलें अगरचे उसी वक़्त से आप हज के सफ़र में हैं लेकिन अभी तक आपने हज या उमरा के सिलसिले का कोई अ़मल नहीं किया था, अब एहराम बांध के आपने गोया उमरे का या हज का अ़मल शुरू कर दिया, हज व उमरे के लिये जाने वाला बन्दा एहराम बाध के और तलबियह पढ़ के उमरे के या हज के अ़मल में उसी तरह दाख़िल हो जाता है जिस तरह नमाज़ पढ़ने वाला बन्दा नमाज़ की नियत करके और तकबीरे तहरीमा कह के नमाज़ में

दाख़िल हो जाता है, अब आपका फ़र्ज़ है कि एहराम की सारी पाबंदियों का ख़्याल रखें, एहराम की हालत में जिन बातों और जिन चीज़ों से मना किया गया है उनसे पुरी एहतियात रखें, किसी से लड़ाई झगड़ा बिल्कुल न करें, चाहे तेज़ी और ग़ुस्से का कैसा ही मौक़ा आये मगर ग़ुस्सा बिल्कुल न आने दें और तलबियह कसरत से पढ़ते रहें, ख़ासकर उतरते वक़्त, चढ़ते वक़्त, हर नमाज़ के बाद सुबह शाम के वक़्त।

जद्दा और वहां से मक्का मुअज़्ज़मा

खुदा ने चाहा तो आपका जहाज़ ख़ैर व आफ़ियत के साथ आपको जद्दा उतार देगा,

वहाँ पहले क़ानूनी बातें पूरी होंगी। (जिसमें कई घन्टे लग सकते हैं) उसके बाद आप जद्दा से रवाना होकर बस एक डेढ़ घन्टे में इन्शाअल्लाह मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच जायेंगे,जब आपको अल्लाह का वह पाक शहर नज़र आने लगे और उसकी इमारतें कुछ दिखाई देने लगें तो आप अल्लाह तअला से दुआ करें।

"ऐ अल्लाह मुझे अपने इस मुक़द्दस (पाक) शहर में ईमान और ख़ैर व आफ़ियत के साथ पहूंचा, और इत्मिनान के साथ रहना नसीब फ़रमा, और इसका अदब करने की तौफ़ीक़ दे"

फिर जब आपकी मोटर मक्का मुअज़्ज़मा की आबादी में दाख़िल होने लगे, तो आप

फिर अल्लाह तआला से दुआ करें।

" ऐ अल्लाह, में तेरा बन्दा हूं, तेरा फ़र्ज़ अदा करने और तेरी रहमत का तालिब बनकर आया हूं, तू मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे, और मेरा हज सही तरीक़े से अदा करादे, और इस शहर की ख़ास बरकतें मुझे नसीब फ़रमा"।

यह बात आप याद रक्खें, कि यह दुआयें करना कोई फ़र्ज़ या वाजिब नहीं हैं, अगर आपने इस मौक़े पर यह दुआयें न कीं तब भी आपके हज या उमरे में कोई नुक़्स या कमी नहीं आयेगी, लेकिन इस तरह मौक़े—मौक़े से दुआयें करने से हज की नूरानियत और बरकत बहुत बढ़ जाती है।

पहला काम मस्जिद–ए–हराम की हाज़िरी और उमरा की अदायगी

मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचने के बाद जहाँ तक हो सके आप जल्द से जल्द बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और उमरे का तवाफ़ करने के लिये मस्जिदे हराम जायें (अगर वजू न हो तो वजू करलें क्योंकि तवाफ़ के लिये वजू ज़रूरी है।)

अगर आपको अल्लाह के किसी ऐसे बन्दे का साथ नसीब हो जाये जो हज व उमरे के मसाइल से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो, और इसका तरीक़ा जानता हो (यानी पहले से इसका

तजुर्बा भी रखता हो) तो आपके लिये यह बेहतर है कि आप उनको साथ लेकर मस्जिद-ए-हराम जायें और उनकी रहनुमाई में उमरे का तवाफ़ और सई करें। इस मौक़े के लिये मस्जिद-ए-हराम के आदाब और तवाफ़ व सई के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ख़ास-ख़ास बातें भी मैं यहां लिखता हूं।

जब आप मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल होने लगें तो दिल के पूरे अदब के साथ और बिस्मिल्लाह पढ़ के पहले दाहिना पाँव दरवाज़े के अन्दर रक्खें, और दरूद शरीफ़ के साथ वही दुआ पढ़ें जो हर मस्जिद में दाखिल होते वक़्त पढ़ी जाती है। और जो आपको

भी याद होगी।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी, वफ़्तह ली

अब–वा ब रहमतिक।

ऐ अल्लाह मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

फ़िर अन्दर पहुंच कर बैतुल्लाह शरीफ़ पर जब आपकी नज़र पड़े तो अल्लाह तअला से आप दुआ करें।

ऐ अल्लाह ! अपने इस पाक और

मुबारक घर को और ज्यादा अजमत

और बरकत दे और हज व उमरे के लिये

लिये आने वाले तेरे बन्दों में से जो तेरे

इस घर की पूरी–पूरी ताज़ीम (बड़ाई)

करें तू उनके दर्जे बुलन्द कर, और यहां

की ख़ास बरकतें और रहमतें उनको

नसीब फ़रमा! ऐ काबा के रब दुनिया

और आख़िरत की सब तकलीफ़ों और

बुरी हालतों से मुझे अपनी पनाह में ले।

इसके अलावा और भी जो चाहे उस वक़्त दुआ मागें, यह मौक़ा दुआ की मक़बूलियत के ख़ास मौक़ों में से है , यह बात हमेशा के लिये याद रखें कि इस मौक़े पर और सारे हज में

किसी मौक़े पर भी अरबी में दुआ मांगना बिल्कुल ज़रुरी नहीं है, मुअल्लिम लोग और उनके आदमी अरबी बिल्कुल न जानने वाले हाजियों को भी अरबी की जो लम्बी–लम्बी दुआ़यें हर मौक़े पर जिस तरह पढ़वाते हैं वह निहायत ग़लत तरीक़ा है। ऐसे लोगों के लिये बेहतर और आसान यह है कि कुछ छोटी–छोटी दुआयें जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हैं वह माने व मतलब के साथ बस उन दुआ़ओं को याद करलें और उन्ही को पढ़ा करें इनके अलावा जो दुआ़ मांगनी हो अल्लाह पाक से अपनी ज़बान में मांगें।

दुआ के मुतअ़ल्लिक़ आपको यह बात बतलाना ज़रूरी थी इसलिये यहां लिख दी,

अब तवाफ़ और सई के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ज़रूरी–ज़रूरी बातें लिखता हूं।

तवाफ़

मस्जिद–ए–हराम में पहुंचने के बाद सब से पहले आपको तवाफ़ करना होगा, आपको यह याद रखना चाहिये कि जहाज़ में आपने सिर्फ़ उमरे का एहराम बांधा है, और उमरे ही की नियत की है, इस लिय आपको उमरे ही का तवाफ़ करना है। उमरे का एहराम बांधते वक़्त आपने तलबियह शुरू किया था और अब तक कसरत (अधिकता) से उसके पढ़ने का आपको हुक्म था, अब जब आप उमरे का तवाफ़ शुरू करेंगे तो तलबियह का वह

सिलसिला ख़त्म हो जायेगा, उमरे का एहराम बांधने वालों का तलबियह तवाफ़ शुरू करने पर ख़त्म हो जाता है।

नया आदमी तवाफ़ किसी वाक़िफ़ ही के साथ उसकी रहनूमाई (नेतृत्व) ही में कर सकता है, अगर अल्लाह तआला आपको किसी ऐसे बन्दे का साथ नसीब फ़रमाये जो तवाफ़ का सही तरीक़ा भी जानता हो और तजूर्बा भी रखता हो तो फिर तो बस उन्हीं की रहनुमाई आपके लिये काफ़ी होगी लेकिन अगर अपने तौर पर या मुअल्लिम साहब के आदमी की रहनुमाई में आप तवाफ़ करें तो इन बातों का ध्यान रक्खें।

तवाफ़ हजरे असवद के सामने शुरू किया

जाता है, और सात चक्कर पूरे हो जाने पर एक तवाफ़ पूरा होता है।

तवाफ़ का तरीक़ा

तवाफ़ का तरीक़ा यह है कि जब तवाफ़ करने का इरादा हो तो हजरे असवद के सामने इस तरह खड़े हों कि अपना दाहिना मोंढा हजरे असवद के बायें[1] किनारे की सीध में हो और पूरा हजरे असवद आपके दाहिनी तरफ़ हो, यहां खड़े होकर आप तवाफ़ की नियत करें, नियत अस्ल में तो दिल के इरादे का नाम है, लेकिन अच्छा है कि उस वक़्त

---

1. यहां हजरे असवद के बायें किनारे से मुराद वह किनारा है जो आपके बाईं तरफ़ हो।

आप ज़बान से भी कहलें कि:–

ऐ अल्लाह ! मैं तेरे हुक्म के मुताबिक़ तेरे इस पाक घर का तवाफ़ करना चाहता हूं , तू सही तरीक़ें से उसको अदा करादे और क़ुबूल करले।

यह नियत और दुआ करने के बाद आप ज़रा दाहिनी तरफ़ हट कर हजरे असवद के बिल्कुल सामने आ जायें कि हजरे असवद आपके चेहरे और सीने की सीध में हो, और नमाज़ की तरह दोनों हाथ कानों तक उठाके कहें।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

फिर अगर मौक़ा हो तो आगे बढ़के अदब

से हजरे असवद को चूमें, और अगर तवाफ़ करने वालों की भीड़ और परेशानी की वजह से हजरे असवद को चूमने का उस वक़्त मौक़ा न हो तो आप सिर्फ़ इतना करें कि अपना दाहिना हाथ उसको लगाकर बस हाथ को चूम लें और अगर यह भी मुश्किल हो तो सिर्फ़ इतना ही काफ़ी है कि हजरे असवद के मुक़ाबले मे जहाँ आप खड़े हैं वहीं से अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ हजरे असवद की तरफ़ करके (इस तरह कि उस वक़्त आपके हाथों की पुश्त आपके चेहरे की तरफ़ हो) बस अपनी हथेलियों ही को चूम लें,[1] शरींअत में

---

1. हाजियों कि आसानी के लिये हजरे असवद से मताफ़ के आख़िर तक फ़र्श पर कथ्यई रंग की (शेष अगले पनने पर)

यह भी ऐसा ही है जैसाकि खुद हजरे असवद का चूमना तो इनमें से जो सूरत भी हो सके आप उसी को करके तवाफ़ शुरू करदें।

एक तवाफ़ में ख़ाना–ए–काबा के सात चक्कर लगाये जाते हैं, और तवाफ़ करने वाला हजरे असवद के सामने से चलकर जब फिर हजरे असवद के सामने पहुंचता है तो एक चक्कर पूरा होता है, इस तरह के सात चक्कर जब पूरे हो जायें तो एक तवाफ़ होता है।

हर चक्कर में जब हजरे असवद के सामने से गुज़रना हो तो अगर उसके चूमने का मौक़ा मिले तो हर दफ़ा अदब से उसको चूम

(शेष पिछले पन्ने का) एक पट्टी खींची गई है जब आप उस पर खड़े होंगे तो हजरे असवद के बिल्कुल मुक़ाबिल में होंगे।

के आगे बढ़ जायें, और अगर इसका मौक़ा न हो तो अभी ऊपर जैसा कि बतलाया अपना दाहिना हाथ उस तक पहुंचाके उसी को चूम लिया जाय, या अपनी हथेलियाँ दूर से उसकी तरफ़ करके उनहीं को चूम लिया जाय, इसको "इस्तिलाम" कहते हैं, और इस्तिलाम की यह तीनों सूरतें हैं, मतलब यह है कि यह इस्तिलाम तवाफ़ के हर फेरे में किया जाता है, कुछ लोग हर फेरे में जब हजरे असवद के सामने पहुंचते हैं तो नमाज़ की तरह दोनों हाथ कानों तक उठाते हैं, यह सही नहीं है, इस तरह कानों तक हाथ सिर्फ़ तवाफ़ शुरू करते वक़्त उठाये जाते हैं, आप इसका ख़्याल रखें।

कुछ नादान लोग हजरे असवद तक पहुंचने

और उसको चूमने के लिये बड़ी ज़बरदस्ती और धींगा मुशती (धक्का मुक्की) करते हैं, अल्लाह के दूसरे बन्दों को धक्के तक दे देते हैं, ऐसा करना बड़ी सख़्त बेअदबी और बड़े गुनाह की बात है, इस मामले मे बड़ी एहतियात करनी चाहिये। आपका दिल हजरे असवद चूमने को ख़्वाह कितना भी चाहे, लेकिन हरगिज़ ऐसा न हो कि अल्लाह के किसी बन्दे को तकलीफ़ पहूंचाकर आप हजरे असवद चूमने की कोशिश करें।

तवाफ़ की दुआयें

आम मुअल्लिम और उनके आदमी तवाफ़

में हाजियों से जिस तरह लम्बी दूआयें पढ़वाते हैं जिनको अकसर हाजी बिल्कुल नहीं समझते, बल्कि अरबी न जानने की वजह से ज़्यादातर ग़लत सलत पढ़ते हैं, तो यह तरीक़ा जैसा कि ऊपर लिख चुका हूं बहुत ग़लत है, और तवाफ़ को बिल्कुल बेलुत्फ़ (बे मज़ा) बना देने वाला है, अल्लाह व रसूल ने तवाफ़ के लिये कोई ख़ास दुआ मुकर्रर नहीं की है, और ख़ासकर यह लम्बी लम्बी दुआयें जो मुअल्लिम लोग पढ़वाते हैं आम किताबों में लिखी होती हैं उनका तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से तवाफ़ में पढ़ना साबित भी नहीं है, रसूलल्लाह (स०) से बहुत छोटी–छोटी यह दो दुआयें तवाफ़ में पढ़ना साबित है, आप इन दोनों को

याद करलें।

(1)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ
فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल अफ़-व वल-आफ़िय-त फ़िद्दुन्या वल-आख़िरह।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे गुनाहों की माफ़ी और आफ़ियत मांगता हूं दुनिया और आख़िरत में।

(2)

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तउं व-फ़िल

आख़ि–र–ति– ह–स–न–तऊं–व क़िना अज़ाबन्नार।

ऐ परवरदिगार ! हमको दुनिया में भी अच्छी हालत नसीब फ़रमा और आख़िरत में भी, और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

यह दूसरी दुआ जिसको हुज़ूर (स०) तवाफ़ में (रुक्ने यमानी और हजरे असवद के बीच में) कसरत से पढ़ा करते थे, कुरआन शरीफ़ की एक आयत है।

कुरआन शरीफ़ में और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूआओं में और भी छोटी छोटी ऐसी बहुत सी दूआयें हैं जो याद करने के लायक़ हैं और तवाफ़ में और दूसरे मौक़ों पर पढ़ने के लिये भी निहायत मुनासिब हैं, और बड़ी आसानी से याद हो सकती हैं, मैं

उनमें से सिर्फ़ चार पाँच और यहाँ लिखे देता हूं, आप उनको याद करलें।

(1)

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِىْ بِرَحْمَتِكَ وَجَنِّبْنِىْ عَذَابَكَ

अल्लाहुम–म ग़श्शिनी बिरह–मति–क व–जन्निब्नी अज़ाब्बक।

ऐ अल्लाह ! मुझे अपनी रहमत से ढाँक ले और अपने अज़ाब से बचा दे।

(2)

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या क़य्यूम, बि–रह–मति–क अस्तग़ीसु।

ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और सबके थामने वाले ! बस तेरी रहमत से मैं मदद चाहता हूं।

(3)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ
مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

ला इला–ह इल्ला अन त सुबहा–न–क इन्नी कुन्तु मिनज़–ज़ालिमीन।

ऐ अल्लाह ! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक़ है मैं ज़ालिमों और ख़ता वारों में से हूं।

(4)

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ

रब्बिग़फ़िर वरहम व अन त ख़ैरुर्राहिमीन

परवरदिगार ! बख़्श दे और रहम फ़रमा, तू सबसे अच्छा रहम करने वाला है।

(5)

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ

अल्लाहुम–म्मफ़ तह लना अबवा–ब रहमतिक व सहिहल लना अबवा–ब रिज़कि क।

ऐ अल्लाह ! हमारे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे और रिज़्क़ की राहें हमारे लिये आसान करदे।

अल्लाह के जो बन्दे ज़्यादा पढ़े लिखे न हों उनके लिये यही बेहतर है और बिल्कुल

काफ़ी है कि वह ऐसी ही छोटी–छोटी दुआयें अर्थ व मतलब के साथ याद करलें, और तवाफ़ में उन्हीं को पढ़ा करें, लेकिन ज़रूरी यह भी नहीं है इसलिय अगर तवाफ़ में सिर्फ़।

سُبْحَانَ اللّٰہ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہ، لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہ، اَللّٰہُ اَکْبَر،

सुबहानल्लाह, अलहमदुलिल्लाह, लाइला ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर।

या दरुद शरीफ़ या सिर्फ़ "या अल्लाह, या अल्लाह" ही पढ़ते रहें, जब भी तवाफ़ हो जायेगा।

तवाफ़ के सिलसिले में एक बात यह भी याद रखने की है कि मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर यह जो पहला तवाफ़ आप करेंगे यह उमरे का तवाफ़ है और इसके बाद आपको

उमरे की सई करनी होगी और यह क़ायदा है कि जिस तवाफ़ के बाद सई करनी हो उस तवाफ़ में **रमल** किया जाता है।

रमल इसको कहते हैं कि तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में पहलवानों की तरह सीना तान के और शाने (कंधे) हिलाते हुये ज़रा तेज़ चला जाये और क़दम क़रीब–क़रीब डाले जायें, और उस वक़्त एहराम की ऊपर वाली चादर इस तरह ओढ़ी जाये कि उसका दाहिना हिस्सा दाहिने हाथ के नीचे से निकाल के बायें कन्धे पर डाल लिया जाय, अरबी में इसको "इज़तिबा" कहते हैं। तो मतलब यह है कि अपने इस तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में आप रमल भी करें और इज़तिबा भी करें

और बाक़ी चार चक्करों में अपनी चाल के मुताबिक़ चलें (याद रहे कि औरतों के लिये तवाफ़ में न रमल का हुक्म है न इज़तिबा का)।

तवाफ़ के सात चक्कर पूरे करके जब आप हजरे असवद के सामने पहुंचें तो फिर हजरे असवद का "इस्तिलाम" उसी तरीक़े से करें जो पहले बतलाया जा चुका है, अब आपका तवाफ़ पूरा हो गया।

तवाफ़ को पूरा करके आप दो रकअ़त नमाज़ मक़ामे इब्राहीम के पीछे या हतीम में भी मस्जिद–हराम में जहाँ भी जगह मिल जाय पढ़ें और सलाम फेरने के बाद ख़ूब दिल लगाकर दुआ मांगें।

हर तवाफ़ के पूरा होने पर यह दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना वाजिब है।[1] मक़ामे इब्राहीम में बड़ी भीड़ होती है, वहाँ खींच तान करके नमाज़ पढ़ने से बेहतर यह है कि हतीम में या मस्जिद–ए–हराम में किसी दूसरी जगह पढ़ ली जाय।

यह दो रकअत नमाज़ पढ़ने के बाद मुल्तज़म पर जाकर आप दुआ करें, बैतुल्लाह शरीफ़ में जिस तरफ़ दरवाज़ा है उसी तरफ़ दरवाज़े से लेकर हजरे असवद तक काबा की दीवार का जो हिस्सा है, उसको मुल्तज़म

1. इस लिये वाजिबु त्तवाफ़ की नियत करें न कि नफ़ल की।

कहते हैं, रिवायात में है कि हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा–ए–किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) उससे चिमट–चिमट कर दुआयें किया करते थे, तो तवाफ़ के बाद वाली यह दो रकअतें पढ़ कर आप उस मुल्तज़म पर जायें, और अगर मौक़ा मिल जाये तो उससे चिमट कर और अपने सीना व गाल को उस पर लगाकर दुआ माँगें, दुआ की क़ुबूलियत की यह ख़ास जगह और ख़ास मौक़ा है।

यहाँ की दुआ से आप फ़ारिग़ होकर ज़मज़म शरीफ़ का पानी खूब पेट भर कर तीन साँस में पियें, शुरू में बिसमिल्लाह और आख़िर में

अलहम्दु लिल्लाह कहें, और दुआ माँगें।

इन सब मौक़ों पर भी मुअल्लिम लोग अरबी दुआयें पढ़वाते हैं जिनको अकसर लोग बिल्कुल नहीं समझते, आप तो अपनी ज़बान ही में दुआ मांगें लेकिन जहाँ तक हो सके खूब दिल से मांगें दुआ दरअस्ल वही है जो दिल से मांगी जाय।

उसके बाद आपको सई करना होगी, तवाफ़ की तरह यह सई भी आप किसी न किसी की रहनुमाई में करेंगे, इसके मुतअल्लिक़ दो तीन

बातें याद रखें।

(1)

जब आप सई के लिये मस्जिद–ए–हराम से चलें तो पीछे बतलाये हुये तरीक़े के मुताबिक़ हजरे असवद का इस्तिलाम करके सफ़ा पर आयें और ऐसी जगह खड़े होकर जहाँ से बैतुललाह शरीफ़ नज़र आये और उस तरह हाथ उठाके जिस तरह दुआ के लिए उठाये जाते हैं, ख़ूब दिल लगाकर और देर तक दुआ करें, इस दुआ मे सब से पहले अगर अल्लाह की तौहीद का यह कलिमा आप पढ़ें तो बहुत अच्छा है।

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ

ला इला ह इललल्लाहु वह दहू ला शरी क लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, बादशाहत उसी की है और वही हर तारीफ़ के क़ाबिल है और हर चीज़ पर उसकी क़ुदरत है।

इसके बाद जो जी चाहे दुआ करें और खूब इतमिनान से दुआ करें, इसी तरह जब सफ़ा से चलकर आप मरवा पर पहूंचें तो वहाँ

भी खूब इतमिनान से और ठहर कर दुआ करें, और रास्ते में भी अल्लाह से ग़ाफ़िल होकर न चलें, उससे दुआ करते रहें, सई के लिये वजू ज़रूरी नहीं है लेकिन बेहतर है।

सई के वक़्त हुज़ूर स० से एक छोटी सी दुआ साबित है आप उसको याद कर लें, बड़े प्यारे शब्द हैं।

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ

रब्बिग़फ़िर वरहम इन्न क अनतल अ अज़्ज़ुल अकरम।

मेरे परवरदिगार ! बख़्श दे और रहम फ़रमा, तू बहुत ग़ालिब और बड़ा ताक़तवर है, और बड़ा करीम है।

(2)

सई में बहुत से लोगों को कुछ ग़लतियाँ करते देखा है आप उनसे बचें।

कुछ लोग सफ़ा और मरवा पर पहुंच कर इस तरह कानों तक हाथ उठाते हैं जिस तरह नमाज़ के शुरू में उठाये जाते हैं, यह सही नहीं है।

हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम सई में सफ़ा और मरवा पर बहुत इत्मिनान से और खूब देर तक दुआ फ़रमाया करते थे, अब लोग उसमें बहुत कोताही करते हैं, आप हर फेरे मे जब सफ़ा और मरवा पर पहुंचें तो ख़ूब इत्मिनान से और दिल लगा कर दुआ करें,

ख़ास कर सई शुरू करते वक़्त पहली दफ़ा सफ़ा पर और सई के ख़त्म पर आख़िरी दफ़ा मरवा पर खूब ही जी लगा कर और दिल से दुआ करनी चाहिये।

सई के सातों फेरे पूरे करके मस्जिद–ए–हराम में आकर मताफ़ में दो रकअत नमाज़ पढ़नी चाहिये। यह फ़र्ज़ या वाजिब तो नहीं है मगर सुन्नत है। हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम से साबित है, अगर मताफ़ में हजरे असवद के सामने यह दो रकअतें पढ़ें तो अच्छा है वरना जहाँ जगह मिल जाये।

---

1. सफ़ा से चलकर मरवा तक एक फेरा हो जाता है इसी तरह मरवा से चलकर सफ़ा तक एक फेरा।

अब आपका उमरा पूरा हो गया, उमरे में दो ही काम करने होते हैं :– (1) तवाफ़ और (2) सई। आप यह दोनों काम कर चुके, अब सर के बाल मूंडवा दीजिये, या अगर मुंडवाने में कोई मजबूरी हो (और बाल एक पोरे से ज़्यादा हों) तो कतरवा दीजिये, बस अब आपका एहराम ख़त्म हो गया और एहराम की सारी पाबंदियाँ भी ख़त्म हो गईं।

इसके बाद से 8 ज़िलहिज्जा तक मक्का मुअज़्ज़मा में बग़ैर एहराम के रहियें[1] अब आपको 8 ज़िलहिज्जा तक कोई ख़ास काम नहीं करना है, नफ़ली तवाफ़ जितने हो सकें कीजिये,

---

1. हज का एहराम 8 ज़िलहिज्जा से पहले भी बांधा

(शेष अगले पन्ने पर)

नफ़्ली तवाफ़ का तरीक़ा भी वही है जो पहले लिखा जा चुका है, अलबत्ता इन तवाफ़ों में रमल और इज़्तिबा नहीं किया जायेगा और नफ़्ली तवाफ़ के लिये एहराम भी नहीं है।

इन दिनों में अगरचे एहराम की पाबंदियां आप पर नहीं हैं लेकिन हर क़िस्म के छोटे बड़े गुनाहों से बहुत बचिये, ख़ास तौर से लड़ाई झगड़े से, और दूसरों की बुराई करने और उन पर एतराज़ करने से, और किसी के मुतअल्लिक़ नाहक़ बदगुमानी से अपने

(शेष पिछले पन्ने का) जा सकता है लेकिन आम लोगों के लिये यही अच्छा है कि वह आठवीं ही को मिना रवाना होने से पहले मस्जिद–ए–हराम में बांधें।

आपको और अपने दिल व ज़बान को बहुत बचाइये और. जहाँ तक हो सके बस ज़िक्र व इबादत, दीनी दावत और दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में मशगुल रहिये, और सौ बातों की एक बात यह है कि अल्लाह के किसी नेक और सालेह बन्दे का साथ पकड़ लीजिये और बस उनके साथ और उनकी सोहबत में रहिये, इन्शाअल्लाह जो अच्छे और वहाँ करने के काम हैं उनकी तौफ़ीक़ मिलती रहेगी और जो बुरे और न करने के काम हैं उनसे बचना आपके लिये आसान हो जायेगा।

हज का एहराम और मिना की रवानगी

8 ज़िलहिज्जा को आपको हज के लिये

दोबारा एहराम बांधना होगा, यह एहराम उसी तरह बांधा जायेगा जिस तरह आपने उमरे के लिये पहली दफ़ा बांधा था, बस यह फ़र्क़ होगा कि वहाँ आपने उमरे की नियत की थी और आज एहराम बांधते वक़्त आप हज की नियत करेंगे।

अब इस एहराम के बाद फिर तलबियह उसी तरह कसरत (अधिकता) से पढ़ये और उन सब मौक़ों पर तलबियह पढ़ते रहिये जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है।

आज के दिन एहराम बांध के आप और सारे हाजी मिना जायेंगे, मिना का फ़ासला

मक्का मुअज़्ज़मा से बस लग भग 6 किलो मिटर है, आपके लिये यह बेहतर होगा कि मिना पैदल जायें, ख़ुदा के फ़ज़्ल से आप जवान हैं, तन्दूरुस्त हैं, मगर चाहें तो सवारी से भी जा सकते हैं।

मिना पहूंच कर आपको कोई ख़ास काम नहीं करना होगा, अगली सुबह तक सिर्फ वहाँ ठहरना ही इबादत है। (8 ज़िलहिज्जा की ज़ोहर से 9 ज़िलहिज्जा की फ़ज्र तक पांच नमाज़ें वहाँ पढ़ना सुन्नत है) लेकिन जहाँ तक हो सके आप यह वक़्त ज़िक्र व इबादत और दुआ व इस्तिगफ़ार में, या दीन की दावत और कौशिश में गुज़ारें।

अरफ़ात

9 ज़िलहिज्जा की सुबह को सारे हाजी मिना से अरफ़ात रवाना होंगे, अरफ़ात यहाँ से क़रीबन 6 मील या 10 कि० मी० है, अगर ज़्यादा थक जाने का डर न हो तो आप अरफ़ात भी पैदल ही जाइये, लेकिन अगर यह ख़तरा हो कि आप इतना चल कर थक जायेंगे और इस थकन की वजह से अरफ़ात में दुआ वग़ैरा अच्छी तरह न हो सकेगी तो फिर आप मोटर या लारी से चले जायें।[1]

आज के दिन अरफ़ात में ज़ोहर के बिल्कुल

---

1. अब बहुत ज़्यादा भीड़ की वजह से सवारी से जाने में बहुत वक़्त लगता है।

शुरू वक़्त में मस्जिद नमरा में ज़ोहर और अ़सर की नमाज़ एक साथ होगी, आज के दिन के लिए शरीअ़त का यही हुक्म है कि असर की नमाज़ ज़ोहर के साथ ही पढ़ ली जाये ताकि शाम तक के वास्ते दुआ वग़ैरा के लिये बिल्कुल फ़ुरसत हो जाये, आप उस जामअत में शरीक हों सकें तो दोनों नमाज़ें जमाअ़त के साथ उसी वक़्त पढ़लें, लेकिन अगर क़िसी वजह से उस जमाअ़त में आपकी शिरकत न हो सके तो फिर आप ज़ोहर अपने वक़्त पर और असर अपने वक़्त पर पढ़ें।

अरफ़ात में ज़वाल के बाद से सूरज डूबने तक का वक़्त बहुत ही अहम और बड़ा क़ीमती वक़्त है, उस वक़्त में अल्लाह को दिल की

जितनी गहराई से याद किया जा सके, जितना उसके सामने रोया जा सके, और जितना कुछ और जो कुछ उससे मांगा जा सके, उसमें हरगिज़ कमी न की जाये और जहाँ तक हो सके यह दुआ और ज़िक्र खड़े होकर किया जाये यही सुन्नत है।

अल्लाह की याद के कलिमों में से इस कलिमा की वहाँ ख़ास तौर से कसरत की जाये।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْر

ला इला ह इल्ललला‍हु वहदहू ला शरी–क लहू लहुल मुलकु व–ल–हुल हमदु व–हु–व अला कुल्लि शैइन क़दीर।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है वह एक है, अकेला है, उसका कोई शरीक साझी नहीं, हर चीज़ पर वह कुदरत रखता है।

हुजूर स० ने फ़रमाया कि :– अरफ़ात के दिन मेरी और मुझसे पहले नबियों की ख़ास पुकार यही कलिमा है।

बहरहाल इस कलिमे के ज़रिये और इसके अलावा भी अल्लाह के ज़िक्र के जिन अच्छे कलिमों के ज़रिये आप चाहें, अल्लाह तआला को यहाँ खूब याद करें और खूब दिल से और रो–रो के उससे दुआयें करें, यहाँ का ख़ास वज़ीफ़ा दुआ व इस्तिगफ़ार और अल्लाह से मांगना और उसके हुज़ूर में रोना ही है, इसलिये दुआ में और रो–रो के अल्लाह से मांगने में

यहाँ कोई कमी न करें, सब से ज़्यादा अपने लिये और अपने माँ बाप के लिये मग़फ़िरत और गुनाहों की बख़्शिश मांगें, दोज़ख़ से और हर क़िस्म के अज़ाब से छुटकारे की और जन्नत और अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी हासिल होने की दुआ करें, इसके अलावा दुनिया और आख़िरत की हर ज़रूरत और हर भलाई का अल्लाह तआ़ला से सवाल करें, फिर अपने अ़लावा उन लोगों के लिये भी दुआ करें जिनका आप पर कोई हक़ है और कोई ताअ़ल्लुक़ है, और फिर हुज़ूर (स०) की सब उम्मत के लिये भी दुआ करें।

अरफ़ात में अपने ख़ेमे में भी आप इसी ज़िक्र व दुआ में और तौबा व इस्तिग़फ़ार और

गिरया व ज़ारी (रोने गिड़गिड़ाने) में मशग़ूल रहें, और शाम होने पर या जब अपने मुअल्लिम के साथ या उनके किसी आदमी के साथ या अकेले आपको जबले रहमत (रहमत पहाड़) पर जाने का मौक़ा मिल जाये तो वहाँ भी अल्लाह की रहमत की पूरी–पूरी उम्मीद के साथ खूब दुआ करें, यह वह जगह है जहाँ हज्जतुलविदा में हुज़ूर (स०) ने खुतबा इरशाद फ़रमाया था, और अपने परवरदिगार से बड़ी–बड़ी दुआयें मांगी थीं, और अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी क़ुबूलियत की खुशख़बरी हुजूर (स०) को मिल गई थी, मगर रहमत पहाड़ पर जाना ज़रूरी नहीं है, वहाँ जाने से भीड़ की वजह से सख़्त तकलीफ़ का और

बाज़ दफ़ा साथियों से बिछड़ने का ख़तरा होता है।

मुज़दलफ़ा

सूरज डूबने तक आप अरफ़ात ही में रहेंगे और सूरज डूबने के बाद बग़ैर मग़रिब की नमाज़ पढ़ें आपको यहाँ से मुज़दलफ़ा जाना होगा, मुज़दलफ़ा से क़रीब तीन मील (5 क़ि० मी०) के है, अगर इतना पैदल चलने में ज़्यादा थक जाने का ख़तरा न हो तो यही बेहतर होगा कि आप मुज़दलफ़ा पैदल जायें, और वहाँ पहुंच कर मग़रिब और इशा की नमाज़ मिलाकर इशा ही के वक़्त में पढ़ें, आज के दिन जिस तरह ज़ोहर और असर दोनों मिलाकर

अरफ़ात में ज़ोहर के वक़्त पढ़ी जाती हैं, उसी तरह मग़रिब व इशा दोनों मिलाकर इशा के वक़्त में मुज़दलफ़ा पहुंच कर पढ़ी जाती हैं, यही शरीअ़त का हुक्म है और यही हुज़ूर (स०) की सुन्नत है, नमाज़ें अकेले या जमाअत से पढ़ी जायें यहाँ दोनों में यही हुक्म है।

यह रात यहीं मुज़दलफ़ा में गुज़ारी जायेगी, इस रात में भी जितना हो सके खूब दिल से अल्लाह का ज़िक्र किया जाये और उससे दुआयें की जायें, यह बड़ी बा बरकत रात है, इसमें बड़ी रहमतें नाज़िल होती हैं, बहुत से हाजी अरफ़ात से आकर यहाँ बस पकड़ के सो जाते हैं और सुबह को उठते हैं, यह बड़े घाटे की बात है, अरफ़ा के दिन की तरह इस

रात में भी ज़िक्र व दुआ की कसरत करनी चाहिये, हदीसों में है कि हुज़ूर (स०) ने अरफ़ा के दिन अरफ़ात के मैदान में कई दुआयें कीं थीं उनमें से सब तो क़ुबूल हो गई थीं लेकिन एक की क़ुबूलियत की ख़ुशख़बरी अल्लाह तआला की तरफ़ से वहाँ आपको नहीं मिली थी, आपने मुज़दलफ़ा पहुंच० कर रात में फिर अपने अल्लाह से उम्मत के लिये वह दुआ मांगी तो अल्लाह तआला ने यहाँ उसकी क़ुबूलियत की भी ख़ुशखबरी सुना दी।

तो आप इसको याद रखें कि यह रात सोने में और ग़फ़लत में ख़त्म न हो जाये, अगर नींद ज़्यादा आ रही है तो थोड़ा सा सो भी लीजिये लेकिन फिर ज़्यादा सवेरे ऊठकर

ज़िक्र व इबादत और अल्लाह तआला से दुआयें कीजिये और फ़ज्र की नमाज़ भी शुरू वक़्त में पढ़ लीजिये, और उसके बाद देर तक अल्लाह के ज़िक्र में और दुआ मे मशगूल रहिये, और जब सूरज निकलने का वक़्त क़रीब आ जाये तो यहाँ से मिना के लिये चल दीजिये।

मुज़दलफ़ा से मिना

मिना यहाँ से तीन मील के क़रीब है, वहाँ पहूंच कर आज आपको कई काम करने होंगे, पहला काम यह है कि आप तीन जमरों में से (जिनको लोग शैतान कहते हैं) तीसरे जमरे पर जो सबसे आख़िर में है सात कंकरियाँ मारेंगे, आज यह कंकरियाँ ज़वाल (सूरज ढलने)

से पहले ही सिर्फ़ उसी एक जमरे पर मारी जायेंगी।

कंकरियाँ मारने के लिये जमरे से दो ढाई गज़ के फ़ासले पर इस तरह खड़ा होना चाहिये कि मिना दाहिनी तरफ़ हो और मक्का मुअज़्ज़मा बाईं तरफ़। सात कंकरियाँ सात दफ़ा में कलमे वाली उंगली और अंगूठे से पकड़ कर मारनी चाहिये, और हर कंकरी मारते वक़्त कहना चाहिये।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرْ

बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर

तलबियह ख़त्म

तलबियह जो हज का एहराम बांधते वक़्त

शुरू हुआ था और जिसको चलते फिरते, उतरते चढ़ते आप अब तक बराबर पढ़ते थे, आज की यह कंकरियाँ मारने के साथ उसका सिलसिला ख़त्म हो जाता है, अब आप ज़िक्र के दूसरे कलिमों से अपनी ज़बान तर रक्खें, तलबियह पढ़ने का हुक्म अब आपको नहीं रहा।

क़ुरबानी

यह कंकरियाँ मार कर फ़ारिग़ होने के बाद आपको क़ुरबानी करनी है। मसला यह है कि जो हाजी हज्जे तमत्तो करें या हज्जे क़िरान करें तो उस पर एक क़ुरबानी वाजिब

है, और जो हाजी हज्जे इफ़राद करें तो क़ुरबानी करना उसके लिये वाजिब नहीं, मुस्तहब है, आपने चूंकि हज्जे तमत्तो किया है इसलिये आप पर वाजिब है, लिहाज़ा कंकरियाँ मारने से फ़ारिग़ होकर आप सीधे क़ुरबानी करने की जगह पर जाइये और वहाँ अपनी पसन्द का क़ुरबानी का जानवर ख़रीद के क़ुरबानी कीजिये, क़ुरबानी करके सर के बाल मुण्डवाइये या (अगर बाल एक पोर से ज़्यादा हों तो) कतरवाइये, मगर जैसाकि पहले भी लिखा जा चुका है मुण्डाना अफ़ज़ल (ज़्यादा अच्छा) है। क़ुरबानी के लिये किसी दूसरे को वकील भी बनाया जा सकता है, लेकिन सर के बाल मुण्डवाना या कतरवाना क़ुरबानी के

बाद ही होगा (कुछ उलमा का फ़तवा है कि क़ुरबानी पहले भी की जा सकती है)।

एहराम ख़त्म

अब आपके हज का एहराम भी ख़त्म हो गया, अब आप सिले हुये कपड़े पहन सकते हैं और बीवी से हमबिस्तरी के अलावा वह सारे काम कर सकते हैं जो एहराम की वजह से आपके लिये मना हो गये थे।

आज ही आपको मक्का मुअज़्ज़मा जाके तवाफ़े ज़ियारत करना होगा, इसलिये जब आप क़ुरबानी करके बाल मुण्डवालें या कतरवालें, तो चाहे नहा धो के, और कपड़े

बदल के और चाहे एहराम ही पहने हुये उसी हालत में आप मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो जायें और वहाँ पहूंच कर उसी तरीक़े से तवाफ़ करें, जिस तरीक़े से आप पहले कर चुके हैं। यह तवाफ़े ज़ियारत कहलाता है (इस तवाफ़ के बाद बीवी से हमबिस्तरी भी जायज़ हो जाती है और एहराम पूरे तौर से ख़त्म हो जाता है)।

तवाफ़ से फ़ारिग़ हो कर तवाफ़ के बाद वाली दो रकअतें पढ़ें, मुल्तज़्ज़िम पर जाकर दुआ करें, और फिर हजरे असवद का इस्तिलाम करके सफ़ा मरवा की सई के लिये जायें, और जिस तरह पहले दिन उमरे के तवाफ़ के बाद उमरे की सई की थी, उसी तरह आज इस

तवाफ़े ज़ियारत के बाद हज की सई करें।

फिर सई से फ़ारिग़ होकर मस्जिद–ए–हराम में आकर मताफ़ में अगर हजरे असवद के सामने मौक़ा मिल जाये तो वहाँ, वरना जहाँ भी मौक़ा मिल जाये दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े (यह तवाफ़े ज़ियारत और इसके बाद की सई अगर किसी वजह से 10, ज़िलहिज्जा को न जा सके तो 12 ज़िलहिज्जा को सूरज डूबने से पहले तक की जा सकती है)।

तवाफ़े ज़ियारत के बाद मिना वापसी और 11-12 की रमी

आज मिना से मक्का मुअज़्ज़मा आना इस तवाफ़ और सई के लिये हुआ था, इन कामों

से फ़ारिग़ होकर फिर मिना जाना होगा वहाँ कल और परसों यानी ग्यारहवीं और बारहवीं ज़िलहिज्जा को तीनों जमरों की रमी करनी होगी, यानी तीनों खम्बों पर (जिनको लोग शैतान कहते हैं) कंकरियाँ मारी जायेंगी सिर्फ़ ग्यारहवीं और बारहवीं को रमी करके वहाँ से आ जाना भी ज़ायज़ है, लेकिन अगर तेरहवीं को भी वहाँ ठहरा जाये और उस दिन भी रमी करके वापसी हो तो यह अफ़ज़ल है। इन तीनों दिन की रमी के मुतआल्लिक़ कुछ बातें याद रखने की है।

(1) एक यह कि इन तीनों दिनों में हर रोज़ तीनों जमरों की रमी होती हैं, यानी तीनों पर कंकरियाँ मारी जाती हैं।

(2) दूसरे यह कि इन तीनों दिनों में रमी का वक़्त ज़वाल के बाद का है। (आख़िरी दिन 13 को रमी ज़वाल से पहले भी की जा सकती है)।

(3) तीसरे यह कि इन तीनों दिनों में पहले और दूसरे जमरे पर कंकरियाँ मारने के बाद जमरे से कुछ क़दम आगे बढ़के क़िबले की तरफ़ होकर कुछ देर तक दुआ़ करना चाहिये। यह मौक़ा भी दुआ की क़ुबूलियत के ख़ास मौक़ों में से है। लेकिन आम तौर से लोग इससे बड़ी ग़फ़लत करते हैं, और मुअ़ल्लिम इस चीज़ को बिल्कुल नहीं बतलाते, आप इसको न भूलें, और ग्यारहवीं और बारहवीं को

जब आप रमी करने जायें तो पहले और दूसरे जमरे पर कंकरियाँ फेंकने के बाद ज़रा आगे बढ़के ज़रूर वहाँ खड़े होकर दूआ करें, और अगर तेरहवीं को भी वहाँ ठहरें और रमी करें तो उस दिन भी ऐसा ही करें, हाँ, आख़िरी जमरे की रमी करके दुआ नहीं करनी चाहिये, बल्कि बग़ैर दूआ के वापस आ जाना चाहिये, यानी सिर्फ़ पहले और दूसरे जमरे की रमी के बाद वहाँ ठहर कर दूआ करना मुस्तहब है।

हज के बाद मक्का मुअज़्ज़मा में क़याम

बारहवीं या तेरहवीं को आप मिना से मक्का मुअज़्ज़मा में वापस आ जायेंगे, अलहमदु

लिल्लाह अब आपका पूरा हज अदा हो गया बस एक आख़िरी रुख़सती तवाफ़ करना बाक़ी है, जो मक्का मुअज़्ज़मा से रुख़सत होने के दिन आपको करना होगा, बहरहाल अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से आपके हज के सब आमाल व अरकान अदा हो गये, अल्लाह तआला क़ुबूल करे। अगर चाहें और इन्तिज़ाम हो जाये तो आप आज ही रुख़सती तवाफ़ करके मक्का मुअज़्ज़मा से रवाना हो सकते हैं।

लेकिन ऐसा होता नहीं, मक्का मुअज़्ज़मा से अपने मुल्क वापस होने वालों को भी, और ज़ियारत के लिये मदीना तय्यबा जाने वालों को भी आम तौर से थोड़ी या ज़्यादा मुद्दत मक्का मुअज़्ज़मा मे ठहरना ही पड़ता है, आपको

भी ठहरना पड़ेगा, मक्का मुअ़ज़्ज़मा के इस ठहरने को बहुत ही ग़नीमत और अल्लाह तआला की बड़ी नेमत समझिये, कैसा खुशनसीब है वह बन्दा जिसे उसका मौला (मालिक) मेहमान बनाकर ज़्यादा दिनों तक अपने शहर में रक्खें।

"क्या नसीब अल्लाहु अकबर लूटने की जाय हैं"

बहुत से लोगों के मुताअलिक़ सुना और खुद भी देखा है कि हज के बाद वह मक्का मुअ़ज़्ज़मा में एक दिन भी दिल से और खुशी से रहना नहीं चाहते, हर वक़्त जाने की बातें और कोशिश करते रहते हैं, यह बहुत बुरी हालत और बड़ी महरूमी की बात है अपनी

ज़रूरतों और मसलिहतों की वजह से मक्का मुअज़्ज़मा से जल्दी वापस आ जाने में कोई हरज नहीं, लेकिन दिल न लगना और तबीअ़त का वहां से उचाट होजाना मोमिन (ईमान वाले) की शान नहीं, बल्कि मुनाफ़िक़त की निशानी है।

बहरहाल मुझे आपसे यह बात ख़ास तौर से कहनी है कि हज के बाद वतन जाने या मदीना तय्यबा के लिए सवारी मिलने के इन्तिज़ार में आपको जितने दिनों मक्का मुअ़ज़्ज़मा में ठहरना हो आप पूरी दिल की खुशी के साथ ठहरें, उन दिनों में खूब जी भर के दिन रात नफ़ली तवाफ़ करें, नफ़ली उमरे करते रहें, मस्जिद–ए–हराम में ज़ौक़ व शौक़ के साथ नमाज़ पढ़ें, ज़िक्र व तिलावत में

मशगूल रहें, और ख़ूब दुआयें करें, और वहाँ की रहमतों और बरकतों को दोनों हाथों से लूटें।

मज़े लूटो कलीम अब बन पड़ी है
बड़ी ऊँची जगह क़िसमत लड़ी है

मक्का मुअ़ज़्ज़मा से रुख़सती और आख़िरी अलविदाई तवाफ़

जब मक्का मुअ़ज़्ज़मा से रुख़सत होने का दिन आजाये तो रुख़सत ही की नियत से आख़िरी विदाई तवाफ़ करना चाहिये, यह तवाफ़ भी आप बिल्कुल उसी तरह करेंगे जिस तरह इससे पहले तवाफ़ आपने किये हैं, यह आख़िरी तवाफ़ करते वक़्त आपको क़ुदरती तौर पर काबा शरीफ़ की जुदाई का रंज व ग़म होगा

और ज़रूर होना चाहिये, बल्कि जितना ज़्यादा हो उतना ही आपके लिये अच्छा है, और सच्चे ईमान की निशानी है।

दूसरे तवाफ़ों की तरह इस तवाफ़ के बाद भी दो रकअत नमाज़ पढ़िये, अगर मक़ाम–ए–इब्राहीम के पीछे मौक़ा मिल जाये तो वहाँ, वरना जहाँ मौक़ा मिले वहाँ पढ़िये, और इस नमाज़ को यहाँ की आख़िरी नमाज़ समझ कर खूब दिल से दूआ कीजिये, फिर रुख़सत ही की नियत से आख़िरी बार आबे ज़मज़म शरीफ़ पीजिये और अल्लाह का शुक्र अदा कीजिये, और दुआ कीजिये, और उसके बाद मुल्तज़म पर जाइये और आज़ ख़ूब लिपट कर रोईये और दूआयें कीजिये, आज ख़ास

तौर से यह दुआ ज़रूर कीजिये की अल्लाह तआला आपके हज व उमरे को क़ुबूल फ़रमाये, और मक्का मुअ़ज़्ज़मा और काबा मुकर्रमा के हुक़ूक़ और आदाब की अदायगी में जो ग़लितियाँ हूई उन्हें माफ़ फ़रमाये और फिर यहाँकी हाज़िरी नसीब फ़रमाये और बार–बार नसीब फ़रमाये।

मुल्तज़म से हट कर आख़िर में फिर हजरे असवद पर जाइये और रुख़सती ही की नियत से आख़िरी दफ़ा उसको चूमिये और हसरत से बैतुल्लाह शरीफ़ को देखते हुये और अल्लाह का ज़िक्र और उससे दूआ करते हुए रवाना हो जाइये।

आज जुदाई के ग़म से आपका दिल जितना भी रोये और आँखें जिस क़दर भी आंसू बहायें

उसी क़दर आपके हक़ में बेहतर और मुबारक है।

मदीना तय्यबा को रवानगी

आप मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबा जायेंगे, मुबारक हो आपका यह जाना।

मदीना तय्यबा की हाज़िरी के सिलसिले में अगर कुछ बातों का आप ख़्याल रक्खेंगे तो इन्शाअल्लाह वहाँ की पूरी–पूरी बरकतें और रहमतें लेकर आयेंगे।

रास्ते ही से दरूद शरीफ़ की कसरत कीजिये और रसूलल्लाह (स०) की याद दिल में ताज़ा कर–कर के और अगर नातिया शेर

याद हों तो उनको पढ़–पढ़ के हूज़ूर (स०) की मोहब्बत की आग को भड़काते चलिये। (इस काम के लिये 1–2 नातिया मजमूए साथ हों तो बेहतर होगा)

जब आप रसूले पाक (स०) के उस मुबारक शहर के क़रीब पहुंचेंगे तो मदीना शरीफ़ की आबादी आपको नज़र आने लगेगी, उस वक़्त और ज़्यादा ज़ौक़ व शौक़ के साथ दरुद व सलाम पढ़िये और अल्लाह तआला से दूआ कीजिये कि :–

"ऐ अल्लाह ! अपने जिस करम से तूने मुझे यहाँ पहूंचाया उसी करम से मुझे यहाँ के आदाब और हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे

और यहाँ की बरकतें और रहमतें मुझे नसीब फ़रमा।"

कुछ ही मिनट में आपकी मोटर मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हो जायेगी, और आप रसूले पाक के उस पाक और प्यारे शहर में जा उतरेंगे, जिसकी हाज़िरी की तमन्ना सारी उमर से आपके दिल में थी और हर मुसलमान के दिल में होती है।

अब आपको चाहिये कि अपने सामान का कोई बन्दोबस्त करके (जिसके बाद आपके दिल मे सामान की कोई फ़िक्र न रहे) और हो सके तो नहा धोकर और कपड़े बदल के, खुशबू लगा के मस्जिद शरीफ़ जायें।

दरवाज़े पर पहूंच कर बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह कह के पहले दाहिना पैर अन्दर रखें फिर बायां, और अल्लाह तआला से अर्ज़ करें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ
اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मग़ फ़िरली ज़ुनूबी वफ़ तह ली अबवा–ब–रह–मतिक।

मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल होकर सबसे पहले उस हिस्से में पहुंचें जिसको 'रौज़तुल जन्नह' और जन्नत की क्यारी कहते हैं,

पहले वहाँ दो रकअ़त तहय्यतुल मस्जिद पढ़ें[1] और सलाम फेरने के बाद अल्लाह तआला की ख़ास उस नेमत के शुक्रिये में कि उसने अपने फ़ज़्ल व करम से यहाँ हाज़िरी की तौफ़ीक़ दी, अल्लाह तआला का खूब शुक्र अदा करें और दूआ करें कि :–

"ऐ अल्लाह ! जिस तरह तूने महज़ अपने करम से यहाँ की हाज़िरी नसीब फ़रमाई उसी तरह अपनी रज़ा और आख़िरत में जन्नत नसीब फ़रमा और रसूलल्लाह (स०) को मेरी शफ़ाअ़त करने वाला बना, और मेरे बारे में आपकी शफ़ाअ़त कुबूल फ़रमा।"

---

1. अगर भीड़ की वज़ह से वहाँ जगह मिलनी मुशकिल हो तो मस्जिद नबवी में कहीं भी पढ़ लें।

इसके बाद हूज़ूर सरवरे कौनैन सल्लाहु अलैहि वसल्लम के मवाजह शरीफ़ में आयें, यानी हुजूरे अक़दस (स०) के चहरा–ए–अनवर के सामने जाकर खड़े हों और यह समझ कर सलाम अर्ज़ करें कि हुजूर (स०) मेरा सलाम खुद सुन रहे हैं।

मक्का मुअज़्ज़मा में जिस तरह कुछ मोअ़ल्लिम लोग तवाफ़ वग़ैरा में अरबी की लम्बी–लम्बी दूआयें आम हाजियों से (यानी अरबी न जानने वालों से भी) पढ़वाते हैं, मदीना तय्यबा में उसी तरह कुछ ज़ियारत कराने वाले भी अरबी के लम्बे–लम्बे सलाम पढ़वाते हैं, यह बहुत ही ग़लत तरीक़ा है।

अरबी न जानने वाले आम हाजियों के लिये आसान और सीधा रास्ता यह है कि हुजूरे नबवी (स०) में पहूंच कर ऐसा छोटा और आसान सलाम पढ़ें जिसको ख़ुद समझते हों, यहाँ आपके लिये बहुत छोटा और आसान एक सलाम लिखता हूं , मेरा ख़्याल है कि हर पढ़ा बे पढ़ा शख़्स यह सलाम खुद समझ कर पढ़ सकता है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهُ،
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ - اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ
النَّبِيِّيْنَ - اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ اَجْمَعِيْنَ -
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अस्सलाम अलै–क या रसूलल्लाह
अस्सलामु अलै–क या हबीबल्लाह

अस्सलामु अलै–क या शफ़ीअल मुज़निबीन
अस्सलामु अलै–क या–ख़ातामन नबिय्यीन
अस्सलामु अलै–क, व अला आलि–क व
असहाबि–क अज–मईन
अस्सलामु अलै–क अय्युहन्नबीय्यु व रहमतुल्लाहि
व–बरकातुहु।

ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम ऐ अल्लाह के हबीब आप पर सलाम ऐ गुनाहगारों की शफ़ाअत करने वाले आप पर सलाम ऐ ख़ातमुन नबीय्यींन (स०) आप पर सलाम, सलाम आप पर और आपके तमाम आल और असहाब पर सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के नबी (स०) और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।

इसके बाद हूज़ूर सल्लाहु अलैहिवसल्लम से अपने लिये और अपने माँ बाप के लिये

दुआ और शफ़ाअत की दरख़्वास्त कीजिये और जिन लोगों के आप पर एहसानात हों या जिन्होंने आपसे कह दिया हो और आपने उनसे वादा कर लिया हो, उनके लिये भी दुआ और शफ़ाअत की दरख़्वास्त कीजिये, (ख्याल रहे कि रसूलल्लाह (स०) शफ़ाअत सिर्फ़ उन्हों लोगों के लिये करेंगे जिनके बारे में अल्लाह की मरज़ी और इजाज़त होगी)।

इसके बाद क़रीबन एक हाथ दाहिनी तरफ़ हट कर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाह अन्हु के चेहरे–ए–मुबारक के सामने आ जाईये और उनकी ख़िदमत में सलाम अर्ज़ कीजिये और कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

"अ़स्सलामुअलै क या ख़लीफ़–त–रसूलिल्लाहि"

फिर एक हाथ और दाहिनी तरफ़ हट कर हज़रत उमर रिज़यल्लाह अन्हु के सामने आ जाइये और उनकी खिदमत में सलाम अर्ज़ कीजिये।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَمِيْرَالْمُؤْمِنِيْنَ

"अस्सलामु अलै क या अमीरल मोमिनीन"

इसके बाद फ़िर जन्नत की क्यारी आकर या मस्जिद शरीफ़ में जहाँ भी मौक़ा मिल जाये दो रकअत नफ़िल पढ़कर अल्लाह तआला

से दूआ कीजिये।

फिर जब तक और जितने दिन आपको मदीना तय्यबा में रहना नसीब हो रोज़ाना उसी तरह मवाजहा शरीफ़ में हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ करते रहिये।

मदीन तय्यबा की तीन और मुतबर्रक चीज़ें

1–जन्नतुल बक़ी

यह मदीना तय्यबा का पूराना क़ब्रिस्तान है, इसमें हुज़ूर (स०) की अक्सर अज़्वाजे मुतुतहहरात (बीवियां) और हुज़ूर (स०) की बेटी सय्यदा फ़ातिमा ज़हरा और दूसरी बेटियां

और आपके बेटे हज़रत इब्राहीम और दूसरे अहले बैते किराम (खानदान वाले) और बहुत से नेक सहाबा (रिज़यल्लाहु अनहु) व ताबईन और बेशुमार औलिया अल्लाह और सुलहा (नेक लोग) और शुहदा (शहीद लोग) दफ़न हैं। हुज़ूर (स०) कभी दिन और कभी रात में वहाँ तशरीफ़ ले जाते थे और वहाँ सोने वालों को सलाम व दुआ से नवाज़ते थे, मर्दाना तय्यबा की हाज़िरी के ज़माने में आप भी वहाँ हाज़िरी दें और सुन्नत तरीके पर सलाम अर्ज़ करें।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْبَقِيْعِ

"अस्सलामु अलैकुम या अहलल बक़ीअ"

बक़ीअ के सोने वालों तुम पर सलाम

फिर उनके लिये (अलग अलग और इज्तिमाई तौर पर) मग़फ़िरत और रहमत की और दर्जों में तरक़्क़ी की दुआ करें और उनके साथ अपने लिये भी दुआ करें कि :-

"ऐ अल्लाह ! यहां तेरे जो अच्छे और मक़बूल बन्दे सो रहे हैं, तू उनकी जिन बातों से राज़ी और ख़ुश हुआ मुझे भी उनका कोई ज़र्रा अता फ़रमा, और उनकी मोहब्बत की बरकत से मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मुझ पर अपनी रहमत फ़रमा और जन्नत में उनका साथ नसीब फ़रमा।

2–उहद पहाड़

मदीना तय्यबा की ख़ास बरकत वाली चीज़ों में से एक जबले उहद (उहद पहाड़) भी है, हुज़ूर (स०) ने उसके मुतअल्लिक़ फ़रमाया है कि :–

"उसको हमसे मुहब्बत है और हमको उससे मुहब्बत है।"

जंगे उहद में जो सहाबा किराम शहीद हुये वह वहीं दफ़न हैं, हुज़ूर (स०) वहाँ तशरीफ़ ले जाते थे और उन शहीदों को सलाम व दुआ से नवाज़ते थे, आप भी कम से कम एक दफ़ा ज़रूर जायें और सुन्नत तरीक़े पर सलाम

अर्ज़ करें और दुआ करें।

3–मस्जिदे कुबा

कुबा मदीना तय्यबा से थोड़े फ़ासले पर एक बस्ती है उसमें एक मस्जिद है जिसका ज़िक्र बड़ी तारीफ़ के साथ कुरआन शरीफ़ में भी किया गया है और हुज़ूर (स०) ने उसमें नमाज़ पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है, आप कम से कम एक दफ़ा वहाँ भी ज़रूर जायें और इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत हासिल करें।

अब यह मस्जिद बहुत शानदार बन गई है।

मदीना तय्यबा से वापसी

जिस रोज़ मदीना तय्यबा से वापसी का इरादा हो तो सफ़र के सामान की पैकिंग से फ़ारीग़ होकर और सफ़र के लिये बिल्कुल तय्यार होकर आख़िरी बार आप मस्जिद शरीफ़ आयें, पहले दो रकअ़त नफ़िल नमाज़ "जन्नत की क्यारी" में पढ़ें, सलाम फेरने के बाद पहले अल्लाह तआला की इस नेमत पर कि उसने हज व ज़ियारत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, शुक्र और हम्द (तारीफ़) करें, उसके बाद ख़ैरियत से वतन पहूंचने की और आख़िरी दम तक दीन व ईमान पर क़ायम रहने की और

आईन्दा भी यहाँ की हाज़िरी की तौफ़िक़ मिलने की खूब दिल से दूआ करें।

दुआ से फ़ारिग़ होकर दरूद व सलाम पढ़ते हुये मवाजहा शरीफ़ में हाज़िर हों और पहले लिखे हुये तरीक़े के मुताबिक़ सलाम अर्ज़ करें आख़िरी बार दुआ करने की और शफ़ाअ़त की दरख़ास्त करें और दीन पर क़ायम रहने के एहद को हुजूर (स०) के सामने दोहरायें और दिल में यह उम्मीद लिये हुये कि इन्शाअल्लाह क़यामत में हुजूर (स०) की वह ज़ियारत भी नसीब होगी जिसमें कोई पर्दा और हिजाब न होगा। दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुये रुख़सत हो जायें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى عَدَدَ مَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى

"अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदि निन्नबीयिल उम्मिय्यि व अला आलिही व अस्हाबिही वबारिक् वसल्लिम कमा तुहिब्बु व तरज़ा अदद मा तुहिब्बु व तरज़ा"

ख़्याल रहे कि ज़ियारत के बयान में ऊपर जो कुछ लिखा गया है यह शरीअत के ज़रूरी हुक्म नहीं हैं बलिक आदाब हैं।

कुछ मशवरे

मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तय्यबा में ठहरने के ज़माने में जहाँ तक हो सके बा-वज़ू रहिये यानी जब वज़ू टूटे तो जल्दी नया वज़ू कर लीजिये।

मक्का मुअज़्ज़मा में ज़्यादा वक़्त मस्जिद-ए-हराम में और मदीना तय्यबा में ज़्यादा वक़्त मस्जिदे नबवी में गुज़ारिये।

इसकी पूरी कोशिश करें कि मक्का मुअज़्ज़मा के क़याम में आप हर वक़्त की नमाज़ जमाअत से मस्जिद-ए-हराम में पढ़ें और मदीना तय्यबा में क़याम के ज़माने में

आपकी हर नमाज़ जमाअ़त के साथ मस्जिदे नबवी में हो।

इस पूरी मुद्दत में जहाँ तक हो सके हर वक़्त अपनी ज़बान ज़िक्र और दुआ व इस्तिग़फ़ार से तर रखें, मक्का मुअज़्ज़मा में "ला इलाह इल्लल्लाहु" ज़्यादा पढ़ें और मदीना तय्यबा में दुरुद शरीफ़ में ज़्यादा मशगूल रहिये।

दोनों जगह कुरआन शरीफ़ का कम से कम एक ख़त्म तो कर ही लीजिये। और कोशिश ज़्यादा की कीजिये।

इस पूरे सफ़र में और ख़ास कर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तय्यबा में दूसरों की

बुराईयां देखने और ऐब निकालने से अपनी ज़बान, अपने दिल और अपनी निगाह को बचाने की बहुत कोशिश कीजिये।

अगर ग़ल्ती से किसी के साथ कोई बुराई या ज़्यादती हो जाये तो वहीं उससे माफ़ करा लीजिये और उसको राज़ी करने की कोशिश कीजिये।

दूनिया के मामूली मामूली हाकिमों के दरबारों में हमारी यह हालत होती है कि न किसी से वहाँ हम लड़ते हैं न झगड़ते हैं न ज़ोर से बोल सकते हैं। बस इसी से समझ लेना चाहिये कि अल्लाह व रसूल के दरबारों में हमें कैसा नीचा बन कर रहना चाहिये।

और आख़िरी बात यह है कि उन मुक़द्दस दरबारों में जब तक हाज़िरी नसीब रहे, रोज़ाना, बल्कि खुदा तौफ़ीक़ दे तो एक एक दिन में सैकड़ों बार अपने गुनाहों से तौबा कीजिये, और पक्का इरादा और अहद कर लीजिये, कि आईन्दा उमर भर उन गुनाहों के पास न जाऊँगा और वापसी के बाद मरते दम तक उस पर क़ायम रहिये, और हमेशा याद रखिये कि आप अल्लाह के ख़ास दरबार में और रसूललालाह (स०) की सरकार में क्या अहद करके आये हैं, और अगर यह अहद टूटा तो आप क़यामत में क्या मुँह दिखा सकेंगे।

अब इस मज़मून को इस दरख़्वास्त पर ख़त्म करता हूं कि मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की दुआओं में अगर कभी कभी इस

नाचीज़ को आप अपने साथ शामिल कर लिया करें, और रौज़-ए-अक़दस की किसी हाज़िरी में इस सियाहकार का भी सलाम सरकारे नबवी मे अर्ज़ कर दिया करें तो इस आजिज़ पर आपका सबसे बड़ा एहसान होगा।

إِنَّ اللهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

"इन्नल्ला ह ला युज़ीओ अजरल मुहसिनीन"

अल्लाह तआला एहसान करने वाले के अज्र को ज़ाए नहीं करता।

وَالسَّلَامُ

वस्सलाम

मो० मन्ज़ूर नोमानी

औरतों के मसायल

इस छोटी सी किताब में औरतों के ख़ास मसायल नहीं आये, इसलिय उनके ज़रूरी मसायल नीचे लिखे जा रहे हैं :–

1– तलबियह "लब्बैक अललाहुम्म लब्बैक" वाली दुआ बुलन्द आवाज़ से न कहेंगी।

2– तवाफ़ में रमल न करेंगी।

3– सफ़ा व मरवा की सई मं कुछ हिस्सा मर्द दौड़ कर चलते हैं, औरतें अपनी चाल चलेंगी।

4– अगर हजरे असवद के पास ज़्यादा भीड़ हो तो बोसा लेने या हाथ लगाने की

कोशिश न करें, हाँ जगह ख़ाली हो, भीड़ न हो तो बोसा लिया करें, या हाथ लगा कर चूम लिया करें।

5– एहराम खोलने के बाद मर्दों के लिये तो बाल मुण्डवाना या कतरवाना दोनों जायज़ हैं, लेकिन औरतें अपने सर के बालों में से एक उँगली के बराबर कतरवा लें।

6– अगर एहराम बांधने के बाद किसी औरत को माहवारी आये तो इस हालत में जिस तरह औरत नमाज़ नहीं पढ़ सकती, रोज़ा नहीं रख सकती उसी तरह मस्जिद–ए–हराम में भी दाख़िल नहीं हो सकती, काबा शरीफ़ का तवाफ़ भी नहीं कर सकती, और अगर एसी हालत पेश आ जाये तो वहाँ

मौक़े पर किसी मुस्तनद आलिमे दीन से मसला पूछ कर अमल किया जाये, माहवारी का यह वाक़ेया हज के मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर पेश आ सकता है, और हर मौक़े के हुक्म अलग अलग हैं, इसलिये ज़रूरी है कि ऐसी औरत किसी आलिम के फ़तवे के मुताबिक़ पूछ कर हर मौक़े के मुताबिक़ हज के मनासिक अदा करे। अपने मेहरम के ज़रिये पूछे या किसी और औरत को वास्ता बनाकर उसके मेहरम के ज़रिये मालूम करे।

والسلام آخراً

मो० मंजूर नोमानी

इस्लाम क्या है ?

मौलाना मो० मंजूर नोमानी

इस में निहायत आसान ज़बान व बेहद दिलनशीन अन्दाज़ में इस्लामी तालीमात का पूरा खुलासा आ गया है।

दीन की ज़रूरी वाक़फ़ियत ही के लिये नहीं बल्कि पूरा मुसलमान और अल्लाह का वली बनने के लिये भी इसका मुतालिआ़ (अध्ययन) और इस पर अमल इन्शाअल्लाह काफ़ी है

मूल्य **40/-**

मो० मोहम्मद मंज़ूर नोमानी (रह०) की उर्दू किताबें

इस्लाम क्या है ?	30/-
दीनोशरीअत	100/-
कुराअन आपसे क्या कहता है।	100/-
मआरिफुल हदीस़ मुक्कमल सात जिल्दें	1000/-
तज़किरा मुजद्दिद अलफेंसानी	80/-
मलफूज़ात मौलाना इलयास (रह०)	35/-
शैख मोहम्मद इब्ने अब्दूल वहाब (रह०) के ख़िलाफ़ प्रोपैगंड़ा	40/-
(अरबी एडीशन)	60/-
तस्व्वुफ क्या है	30/-
नमाज़ और खुतबे की जुबान	8/-
आप हज कैसे करें ?	35/-
आसान हज	10/-
मुन्तख़ब तक़रीरें	50/-
मेरी तालीबे इलमी	5/-
आप कौन हैं, क्या हैं औंर आपकी मंज़िल क्या है ?	10/-
कुरबे इलाही के दो रास्ते	7/-
कुरआन व हदीस़ की सौ दोआयें	9/-

इन्सानियत ज़िन्दा है (उर्दू)	12/-
फ़ैसलाकुन मुनाज़िरा	30/-
मौलाना मौदूदी की साथ मेरी रिफ़ाक़त की सरगुज़श्त	45/-
तबलीग़ी जमाअ़त जमाअतेइस्लामी और बरेलवी हज़रात	18/-
अक़ीदये इल्मे ग़ैब	10/-
क़ादयानी क्यों मुसलमान नहीं ?	30/-
क़ादयानियत पर ग़ौर करने का सीधा रास्ता	12/-
कुफ़रोइस्लाम के हुददे और क़ादयानियत	12/-
कल्मये–तैइयेबा की हक़ीक़त	12/-
बरकाते रमज़ान	20/-
मसअलय हयातुन नबी की हक़ीक़त	10/-
इरानी इन्क़लाब इमाम खुमैनी और शीयीयत (उर्दू)	80/-
इरानी इन्क़लाब इमाम खुमैनी (अंग्रज़ी)	80/-